कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्षः12, अंकः07 अप्रैल 2013

मुख्य संरक्षक

श्री बुद्धिसेन शर्मा

संरक्षक सदस्य

डॉ0 तारा सिंह, मुंबई

श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया,उ.प्र.

सम्पादक

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

प्रबंध सम्पादक

श्रीमती जया

विज्ञापन प्रबंधक

महेन्द्र कुमार अग्रवाल

सहयोग राशि

एक प्रति	: रु0 10/–
वार्षिक	: रु0 110/–
पंचवर्षीय	: रु0 500/–
आजीवन सदस्य	: रु0 1500/–
संरक्षक सदस्य	: रु0 5000/–

संपादकीय कार्यालय

एल.आई.जी.–93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011 **का0ः** 09335155949

ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

सभी पद अवैतनिक हैं।

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस, बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी.–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित कराया गया.

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

इस अंक में......

राष्ट्र स्तरीय १०वां साहित्य मेला सम्पन्न.............. 06

काश! हमने चीन के बारे में ‘सरदार पटेल’ की बात सुनी होती

समाज प्रवाह, मुंबई.................14

क्रांतिकारी वीर उपेक्षित क्यों?............................ 16

-डॉ० इक़बाल अहमद मंसूरी शास्त्री

स्वतंत्र भारत के राजनैतिक पटल पर महाराणा प्रताप की भांति सिद्धांतों पर अडिग प्रो.बलराज मधोक 17

-पूनम राजपुरोहित ‘मानवताधर्मी’

स्थायी स्तम्भ

प्रेरक प्रसंग 04

अपनी बातः आखिर हम कब सुधरेंगें 05

होली पर विशेषः

हितेश कुमार शर्मा, श्री कृष्ण अग्रवाल, संतोष कुमार साहू, सुधीर गुप्ता ‘चक्र’ 20–21

ए मेरे वतन के लोगों 15

कविताएंः

श्रीमती पुष्पा शैली, डॉ० दिनेश त्रिपाठी ‘शम्स’, देवदत्त शर्मा ‘दाधीच’ डॉ० ब्रजेश सिंह 22–23

कहानीः पानी ने बेपानी किया-डॉ. तारा सिंह 26

आध्यात्मः मृत्यु की ओर 28

-डॉ० अरुण कुमार आनंद

आपकी डाक 30

स्वास्थ्य 31

साहित्य समाचार- 24, 32

लघु कथाएं 33

समीक्षा 34

प्रेरक प्रसंग

✍ कार्य करने के लिए यह कितनी अनोखी कहावत है, 'काल करे जो आज कर, आज करे सो अब. पल में परलै होत है, बहुरि करोगे कब.

✍ समय का मूल्य समझो, एक पल एक क्षण भी बेकार नष्ट न करो. जीवन में जो सदा समय का सदुपयोग करता है, वह कभी भी जीवन की होड़ में कभी पीछे नहीं रह सकता.

✍ महान सम्राट नेपोलियन ने अपने शब्द कोष से असम्भव शब्द हटवा दिया था, उसका कथन था कि दुनिया में कोई कार्य असम्भव नहीं.

✍ अस्थिरता जीवन में असफलता तथा निराशा का जन्म देती है. एक कार्य को प्रारम्भ करके दूसरे की ओर लपकना, अपने कार्य को असफलता की ओर ले जाना है. स्थिरता ही हमें कार्य की सफलता देती है.

✍ प्रेम शाश्वत है. हम सदा प्रेम करना चाहते है और कितना अच्छा हो यदि संसार के समस्त व्यक्ति एक दूसरे को प्रेम करने लगें.

✍ प्रेम वह पवित्र धारा है, जिसमें अवगाहन करके वह पवित्र हो जाता है. दुराव, द्वेष, असमानता इससे अलग हो जाती है, प्रेम का सच्चा पुजारी संसार में अमर हो जाता हैं.

✍ प्रेम के साम्राज्य में सदा प्रसन्नता, समानता, सहानुभूमि, ममता, करुणा तथा उपकार की भावनाएं छायी रहती है. ऐसे राज्य में न कहीं संघर्ष ओर न कहीं अभाव ही पनप सकता हैं. सब जगह आनन्द ही आनन्द विद्यमान रहता हैं.

✍ जब कभी पिछली मधुर स्मृतियां याद आती हैं तब अपने विगत जीवन की गाथाएं मन में अत्यन्त आनन्द लाती हैं, हम आत्मविभोर होकर वर्तमान जीवन से उनकी तुलना करते हैं, और ऐसा आभास करते हैं कि मानव कितना परिवर्तन शील हैं.

✍ जीवन की प्रमुख घटनाएं कभी-कभी याद आती रहती हैं, हम उन्हें याद कर सुख या दुःख का अनुभव करते रहते हैं. घटनाएं बीत जाती है, फिर भी उनकी यादें बनी रहती हैं.

-दाउजी

आदाब अर्ज़ है

०१

चुनाव से पूर्व
मेरे देश का नेता
'ठोस' होता है
चुनाव के दौरान
मतदाताओं के सामने
'द्रव' बन कर
आंसू बहाता है/और
चुनाव जीतने के बाद
'गैस' बन कर
गायब हो जाता है.

०२

नगर के प्रत्येक चौराहे पर
मिस्त्रियों के दल
लगा रहे थे नल।
तभी अचानक नेता राम
निवास
आये उनके पास
और बोले 'बस'
अब और नल नहीं गाड़ने है/बल्कि
लगे हुए भी उखाड़ने हैं।
अब
इन परोपकारों का
समय बीत गया
क्योंकि
मैं चुनाव जीत गया।

-हुक्का बिजनौरी, बिजनौर, उ.प्र

कांटों की सेज

मेवा है, बोतल है, सोफा है और बड़ी सी मेज है/ शयन हेतु सुन्दरी है व गद्देदार सेज है/वे फिर भी कह रहे हैं/कि मंत्रीपद कांटों की सेज है।

मिलावट

समाज सेवियों का कहना है/कि ऊंच-नीच को छोड़ मिलजुल कर रहना है/कोई करे न करे हम करके दिखा रहे हैं/सुगन्धित धनियें में गधे की लीद मिला रहे हैं/कई हानिप्रद तत्वों को मिलाकर सिन्थेटिक दूध/बना रहे हैं यही नहीं मिलावट के बाद भी हम/कम तोल रहे हैं/फिर भी उनसे तो अच्छे हैं/जो समाज में बैमनस्यता का विष घोल रहे हैं.

-देवेन्द्र दीक्षित 'शूल',
हाथरस, उ.प्र.

अपनी बात

सब्सीडी समाप्त कर शिक्षा एवं चिकित्सा निःशुल्क कर देनी चाहिए

वर्तमान दौर में केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा जन कल्याण की तमाम योजनाएं चलायी जाती है। जिनको कहने के लिए तो वे जनकल्याण की होती है लेकिन वास्तविकता में वे जनकल्याण नहीं बल्कि स्वकल्याण व पार्टी कल्याण के लिए होती है. जनकल्याणकारी योजनाओं के अतिरिक्त तमाम योजनाएं ऐसी है जिन पर सब्सिडी दी जाती है. इसका मकसद सिर्फ और सिर्फ वोट बैंक होता है. कोई लैपटाप, टेबलेट, टीवी, २ रुपये किलो गेहूं, १ रुपये किलो चावल आदि आदि. चाहे वह सस्ते गले की दुकान हो, किसानों के लिए बिजली/पानी, खाद हो, गैस सिलेण्डर हो इन सबका मकसद अपनी पार्टी के कार्यकर्ताओं को रेवड़ी बांटना होता है. आम जनता का इससे भला कुछ नहीं होता. आम जनता के नाम पर चलायी जा रही ये योजनाएं लूटने का जरिया बन कर रह गयी है. बदले में हमारे ऊपर तमाम तरह के टेक्स लादे जाते है. इन योजनाओं में तमाम घोटाले होते हैं. इन घोटालों का भार भी घूम फिर कर हम आपको ही वहन करना पड़ता है. जब हम आपको ही घूम फिर कर सब कुछ वहन करना है तो इन योजनाओं से क्या फायदा? जिनका उपभोग करने के लिए भी हमें रिश्वत/घूस/सिफारिश की जरुरत पड़ती है. अगर आप द्वितीय श्रेणी के किसी शहर में रहते है तो बिजली, पानी, सीवर व हाउस टैक्स पर भी आपको सामान्यतः एक हजार से पन्द्रह सौ रुपये का भार वहन करना पड़ता है. ये टैक्स तो अनिवार्य है। इनके अतिरिक्त तमाम टैक्स ऐसे होते है जो हमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भरने पड़ते है. ऐसी योजनाओं से क्या फायदा. केन्द्र सरकार से लेकर नगर पालिकाओं, ग्राम समाज तक के टैक्सों की सूची व इसकी गणित को पूरी तरह समझ लगें तो लगता है कि हम पर शायद दुनिया के किसी भी देश से अधिक टैक्स थोपे गये है. इन टैक्सों के नाम पर तमाम की तरह लूट जो होती है वह अलग. लेकिन हम सोचते है कि हमें सरकार ने सब्सिडी दे दी. अरे यह सब्सिडी नहीं बल्कि आपकी जेब की प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष कटौती है। इन लोकलुभावन नारों से जनता को फायदा कम नुकसान अधिक होता है.

आम आदमी दो मुलभूत आवश्यकताएं है शिक्षा और चिकित्सा और वर्तमान परिवेश में ये दोनों ही सबसे अधिक खर्चीर्ले कार्य हैं. केन्द्र सरकार व राज्य सरकारों को चाहिए हर प्रकार की सब्सिडी बंद कर केवल शिक्षा और चिकित्सा को सबके लिए मुफ्त कर दिया जाए. जैसे बैंको का राष्ट्रीय करण किया गया वैसे ही सभी स्कूलों/कॉलेजों, तकनिकी संस्थानों और सभी चिकित्सालयों को सरकारीकरण कर इनमें शिक्षा को पूरी तरह से निःशुल्क कर देनी चाहिए. इसमें इसी तरह से चिकित्सा को भी पूरी तरह से निःशुल्क कर देनी चाहिए. जिससे किसी भी व्यक्ति को दवा, इलाज, आपरेशन आदि में एक पैसे भी खर्च न हो. इनमें ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि कोई भी छात्र/छात्रा अपनी योग्यतानुसार भारत के किसी भी शिक्षण संस्थान में पैसे के कारण शिक्षा लेने में परेशानी न हो. इसी तरह किसी भी आदमी पूरे भारत में कहीं भी अपनी बीमारी का ईलाज कराने की पूरी छूट हो यानि पूरी तरह से निःशुल्क हो. इसके अलावा जितनी भी सब्सिडी, छात्रवृत्ति, स्वास्थ्य बीमा योजनाएं है इनको पूरी तरह बंद कर दिया जाए. हमें इससे फायदा होगा कि हमें अनावश्यक टैक्सों के बोझ तले दबने से मुक्ति मिल जाएगी. प्रारम्भ में यह थोड़ा हमें बोझ लगेगा लेकिन यह हमारे लिए बहुत ही कारगर होगा.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

मानवीय दर्शन के प्रणेता डॉ० भीमराव अम्बेडकर

.संध्या विश्व
श्री जी निवास, जैन कॉलोनी, जवाहर मार्ग, नागदा जं., म.प्र.

हमारे देश में संत, महात्मा, राजनेता, समाज सुधारकों का कभी कोई अभाव नहीं रहा है. हिन्दु समाज में जितनी कुरीतियाँ है उतने ही समाज सुधारक भी हुए. दलित अछूत वर्ग के मानवीय अधिकार तथा उनके उत्थान हेतु हर काल में किसी न किसी समाज सुधारक द्वारा कार्य किए गए, परन्तु कुरूरीतियों को जड़ से कोई भी नहीं उखाड़ पाया. ऐसी स्थिती में दलितों के मुक्तिदाता डा. भीमराव रामजी अम्बेडकर ने अपने अछूतोद्धार-अभियान में अपनी प्रखर बुद्धि, सतत् सक्रिय प्रयासों द्वारा जो बेमिसाल योगदान दिया उसे अद्भुत चमत्कार ही कहा जायेगा.

डॉ. अम्बेडकरजी का १४ अप्रेल १८९१ को महू छावनी(म.प्र.) में के एक दलित परिवार में जन्म हुआ. दलित अछूत वर्ग के प्रति होने वाले प्रत्येक अपमान, अत्याचार को उन्हें प्रारंभ से ही निकटता से देखना और भोगना पड़ा. अम्बेडकरजी बचपन से ही बड़े निर्भिक, संघर्षमयी प्रतिभा सम्पन्न थे. उनका हर कदम देश एवं समाज के उत्थान के लिए सर्वोपरि था. बाबा साहिब दलित उत्थान, अस्पृष्यता-उन्मूलन की बात जब भी करते तो देशोत्थान तथा समाजोत्थान की सीमा-मर्यादा में ही किया करते थे. वे कभी सत्ता-पदलोलुपता या व्यक्तिगत लाभ के पीछे नहीं दौड़े. उनका प्रमुख जीवन उद्धेश्य अछूतोद्धार ही रहा. कारणवश रूढ़ीवादी विरोधियों द्वारा उन्हें देशद्रोही तक कहते हुए अपमानित किया गया. ऐसी अपमान जनक स्थिति का सामना करते हुए अम्बेडकरजी ने अपने सभी विरोधियों को तर्क पूर्ण मुंहतोड़ जवाब देकर सदा पराजित किया. बाबा साहब का कहना था-जो व्यक्ति अपमान सहन करेगा वह जीवन में कभी नहीं उठ सकता. उनकी प्रतिज्ञा थी-यदि मैं अछूतों का कल्याण नहीं कर पाया तो अपना जीवन व्यर्थ समझूंगा. प्रतिज्ञानुसार सामाजिक न्याय के संदर्भित अछूतों को समता तथा न्याय दिलाने के लिए अनेक बार सत्याग्रह किये. भारत में दलित वर्ग को हर प्रकार के अधिकार प्राप्त हों इसके लिए आजीवन पुरजोर आवाज उठाते रहे. उनका सम्पूर्ण जीवन सामाजिक-क्रांति की संघर्ष यात्रा रहा.। कोई माने या न माने परन्तु यह सच है-इस सामाजिक क्रांतिकारी कदम में उनकी मूलतः स्पष्ट विचारधारा थी कि भारत की संस्कृति को नुकसान भी न पहुंचे और दलित वर्ग को जो समानता का अधिकार चाहिए वह भी उन्हें मिल

जाए। देष में प्रत्येक दलित का समाज में सम्मान बढ़े, जीवन स्तर ऊँचा हो, समानता का दर्जा हासिल हो. इसी सपने को साकार करने हेतु संकल्परत रहे.

डा.अम्बेडकरजी पहले युगपुरूष थे जिन्होंने मानव अधिकार दिलवाए. सभी को समानरूप से ऊँची और सस्ती शिक्षा मिले, इस पक्ष में उन्होंने दलितों में वैचारिक-क्रंाति के लिए शिक्षा का प्रचार-प्रसार किया. दलितों में नया जोश, जीवन में आत्म सम्मान की भावना पैदा कर रूढ़ीवादी विरोधियों, अत्याचारियों से संघर्ष करने की हिम्मत जगाई.

डॉ० अम्बेडकर असामान्य महापुरूष थे जिन्होंने अपने ६५ वर्षिय जीवन काल में हर क्षण दलितों के लिए जो सोचा वही किया. इस प्रकार अति गरीब, साधनहीन, अपमानित, अनपढ़, कमजोर, बेजान लोगों में आपसी दलित एकता की भावना अहिंसात्मक विद्रोह और उन्नति के जज्बात पैदा कर देना डा.अम्बेडकरजी का ही चमत्कारिक कमाल था.

बाबा साहब देश के अन्य राजनीतिज्ञों, समाज सुधारकों से अलग हटकर मौलिक दृष्टिकोण के व्यक्ति थे. देश की समृद्धि के लिए उन्होंने भरतीय राजनीति, सामाजिक नीति, धर्म नीति, शिक्षा नीति, प्रशासनिक नीति, अर्थ नीति पर वैज्ञानिक तौर से सामयिक क्रांतिकारी विचारों को क्रियान्वित करते हुए नया स्थापित संविधान भारत को सौंपा यह हमारे लिए वरदान है. इस विरासत को हम अपनी समझ, जिम्मेदारी से भागीदारी सुनिश्चित कर उनके आदर्शो का अनुकरण करते हुए देशोत्थान के लिए सकंल्परत रहें.

सिद्धान्तिक जीवन

यूनिवर्सिटी हर्टफोर्ड शायर के शोधकर्ताओं के अनुसार 'सिद्धान्त-मर्यादा' रखने से आत्मविश्वास बढ़ने लग जाता है जिससे व्यक्ति का भाग्य चमक सकता है. सिद्धान्तिक-मर्यादित मनुष्यों में सकरात्मक सोच विकसित होती है जो उनके दैनिक जीवन में स्वच्छता और सुधार लाती है. इस प्रकार के व्यक्ति अपेक्षाकृत अपने भविष्य के प्रति अधिक आशावान एवं क्रियाशील हो जाते है जहां आत्मविश्वास और अमर प्रेरणा की भावना जागृत होने लगती है. लंदन ब्रिटिश समाचार के अनुसार यूनिवर्सिटी ऑफ हर्टफोर्ड शायर के प्रोफेसर रिचर्ड वाईजमेन के नेतृत्व में शोधकर्ताओं की टीम द्वारा विभिन्न धर्मानुसार रहित पर किये गये परीक्षणों से ऐसे परिणाम सिद्ध हुए है जो आश्चर्यजनक कहें जा सकते हैं. सिद्धात-मर्यादा के अन्तर्गत विभिन्न धार्मिक प्रतीकों को धारण करने वाला व्यक्ति शुद्ध आत्मा होकर निराशा से मुक्ति पा लेता है और आत्मविश्वास से प्रेरित होकर कठिन परिश्रम, सच्ची लगन और सही दिशा में जीवन यापन कर सफलता की ओर अग्रसर होता है और जीवन की ऊंचाइयों को छू लेने की क्षमता मिलती है, यहीं तो रहित का उद्देश्य है. अपनी दिव्य वाणी में रहित को सर्वोच्चता प्रदान करते हुए दशमेष पिता गुरूजी ने समस्त सीमायें लांघते हुए यहां तक कहा है 'रहणी रहे सोई सिख मेरा, वो साहिब में उसका चेरा' अर्थात सिद्धान्तिक-मर्यादित व्यक्ति गुरू का मालिक है और इसके विपरीत गुरूजी उसके सेवक है. कितना मान सम्मान प्रदान किया गया है कि एक रहितवान व्यक्ति को. .**सुरजीत सिंह साहनी,** कोटा, राजस्थान

आप क्या सोचते है?

■ संविधान की प्रथम पंक्ति है-'इंडिया अर्थात भारत संघो का राज्य होगा.' मसलन भारतीय संविधान इंडियाना व्यवस्था आधारित है. जिसमें अन्य नौ देशों की खूबियों को संधारित किया गया है. भारत को खूबियों से शून्य माना गया है।

■ आक्सफोर्ड डिक्शनरी (शब्द कोष) पृष्ठ सं० ७८६ पर इंडियन का अर्थ आफैन्सिव (क्रिमिनल अपराधी या गुण्डा) लिखा हुआ है. मसलन इंडिया का अर्थ हुआ अपराधियों/गुण्डों का देश.

■ आजादी के बाद भारतवर्ष का दो भाग हिन्दुस्तान और पाकिस्तान हुआ. तब एक ही भाग हिन्दुस्तान(भारत) को इंडिया नाम देने की जरूरत क्यों पड़ी? .**किसान दीवान**, महासमुन्द्र, छ.ग.

पत्रिका की आगामी परिचर्चा का विषय

विचारों के अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता कहां तक जायज?

अपने विचार २० अप्रैल २०१३ तक अधिकतम २५० शब्दों में एक फोटो के साथ प्रेषित कर देवें. अच्छे विचारों को उपहार प्रदान किया जाएगा

मुद्दा

जहां देखो वहां सरकारी ≠ बन्धन

✍ समाज प्रवाह, मुंबई

चाणक्य ने कहा था कि अच्छी सरकार वह जो कम से कम शासन करे. टैक्स के लिए कहा कि जैसे मधुमक्खी पुष्प से शहद लेती है जिससे पुष्प को हानि नहीं पहुंचाती और उसे पता भी नहीं चलता. यही बात सरकार के लिए है कि वह भी सुक्ष्म टैक्स वसूले ताकि जनता को टेक्स की चोरी की आदत नहीं पड़े और उससे रिश्वत व काले धन का निर्माण न हो.

आज से ५०/५५ वर्ष पूर्व दक्षिण के गांधीवादी नेता जिन्हें चाणक्य कहा जाता था राजगोपालाचार्य उर्फ राजाजी ने स्वतंत्र पार्टी की स्थापना की थी. उस वक्त उन्होंने मुख्य मुद्दा उठाया था कि आजादी बाद की सरकार लायसन्स और परमिट की सरकार है. जिससे कदम-कदम पर भ्रष्टाचार बढ़ रहा है. उन्होंने स्व+तंत्र की परिभाषा को स्वतंत्र यानि खुद(जनता) का तंत्र जिसमें कोटा, लायसेन्स, परिमट वाला इन्स्पेक्टर राज नहीं होगा. पर जनता ने इस तथ्य को अभी तक नहीं समझा. राजाजी के इस कथन को जनता ने गंभीरता से नहीं लिया. नतीजा दिनोदिन नये कानून, नये लाइसेंस, नये परमिट और तरह-तरह के टैक्स का प्रावधान बढ़ता गया जिसे लेकर रिश्वत और भ्रष्टाचार का प्रमाण सीमा बाहर हो गया. उपरान्त नेताओं का भ्रष्टाचार लाखों करोड़ का बढ़ता ही जा रहा है. चाणक्य ने कहा था कि अच्छी सरकार वह जो कम से कम शासन करे. टैक्स के लिए कहा कि जैसे मधुमक्खी पुष्प से शहद लेती है जिससे पुष्प को हानि नहीं पहुंचाती और उसे पता भी नहीं चलता. यही बात सरकार के लिए है कि वह भी सुक्ष्म टैक्स वसूले ताकि जनता को टेक्स की चोरी की आदत नहीं पड़े और उससे रिश्वत व काले धन का निर्माण न हो पर हमारे नेता विदेश जाते और वहां के जितने भी टैक्स प्रचलित है उनको देश की गरीब जनता पर थोप देते है. नतीजा, आज दुनिया में सबसे अधिक टैक्स का भारत में है. एक मामुली किराने की दुकान खोलने वाले को १७/१८ तरह के लायसेंस लेकर दुकान में टांगने होते है और हर तरह के लायसेंस के लिए सरकारी इन्सपेक्टर को रिश्वत देनी पड़ती है. टेक्स भी ऐसे जबरी कि उनकी वसूली के लिए जेल की सजा निर्धारित की हुई है. टेक्स अगर सच्चे विकास के रास्ते में उपयोग होता तो कोई बात नहीं थी. पर यहां तो टेक्स की रकम भ्रष्टाचार की नालियों में जाती है. सरकारी सड़के, इमारते, परमिट या ठेकों के लिए सीमा बाहर रिश्वत ली जाती है. सरकारी निर्माण की उमर दो-चार सालों में समाप्त हो जाती है. ऐसे भी उदाहरण है कि इमारत/पुल उद्घाटन के पूर्व या उसके २-४ दिन बाद ही ढह जाता है. तब जनता को टेक्स देते हुए कोफ्त होता है. शहर में मकान बनाना हो तो उसके लिए कम से कम ५० सरकारी विभागों में फाईल घूमती रहती है और हर विभाग की रिश्वत बंधी हुई है. बिना रिश्वत के फाईल आगे ही नहीं सरकती. कई लोग तो रिश्वत देकर अनाधिकृत मकान तक खड़ा कर देते है. उसे बिजली पानी तक की तमाम सुविधाएं मिल जाती है परन्तु एक साधारण व्यक्ति को मकान बनाने के लिए कितनी परेशानी होती है इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है.

बात चाहें खेल कूद की हो या देश की सुरक्षा जैसे अति नाजुक मामलों की खरीदी, करोड़ो की रिश्वत, दलाली वसूली जाती है. ऐसे विमान खरीदे जाते है जो उड़ने की जांच में ही गिर पड़ते है. ऐसा ही शस्त्रों के बारे में भी सुना जाता है.

कहने को भारत को दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र कहा जाता है और उसके लिए आकर्षक शब्द है जनता के लिए, जनता के द्वारा जनता की सरकार. ...परन्तु इन शब्दों का भ्रम तो कभी का टूट गया है अब तो प्रजासत्ता की बजाय इसे 'सरकारसत्ता' कहना पड़ता है, इसमें 'सत्ताक' शब्द दण्डात्मक है. लोकतंत्र के शासन में जनता की हिस्सेदारी हुआ करती है पर हमारे यहां जनता को केवल पांच वर्ष में एक बार वोट देने का अधिकार है, फिर चुने हुए प्रतिनिधी, चाहे उन्हें बहुमत मिले या न मिले जोड़तोड़ की राजनीति से सरकार बना लेते है. ऐसी जोड़तोड़ की सरकारो में सभी मिल बांटकर सरकारी धन की लूट करते है उसका बोझ प्रत्यक्ष या परोक्ष टेक्सों द्वारा जनता पर थोंपा जाता है. प्रत्येक सरकारी उद्योग या प्रयास चाहे वह रेल हो, बसें

आजादी पूर्व स्कूल/कॉलेजों में शिक्षा व चिकित्सा निःशुल्क दी जाती थी. परन्तु हमारे बेईमान नेताओं ने इनका निजीकरण कर दिया. सरकारी दवाखानों में कहीं डाक्टर नहीं होता तो रोगी को मिलने वाली दवा नहीं होती वहीं प्राइवेट हास्पीटलों में चमड़ी चीर इलाज का खर्च वसूला जाता है.

हो, विमान हो, कारखाने हो, बैंक हो, निगम हो, उन सभी में कृत्रिम घाटा बताया जाता है और उस घाटे में बेईमानी की रिश्वत और जुड़ जाती है जिसका बोझ टिकट या टेक्स के रूप में जनता के सिर पर लादा जाता है. गरीब बच्चों को स्कूल में नाश्ता दिया जाता है. उसमें भी मिलावट और घटिया स्तर की बेईमानी की मिलीभगत चलती है. बाकी खानपान की वस्तुओं से लेकर अब तो पानी में भी मिलावट चल रही है. सरकारी उपक्रम हो या बैक हर जगह घोटाले और बेईमानी का आलम है. उन सबका दण्ड बतौर टेक्स के या जेल आदि का भय दिखाकर जनता पर थोपा जाता है. हमारे बीच से चुने हुए व्यक्ति हमारा प्रतिनिधित्व करने या विकास और सेवा करने की बजाय लूट कर अपना घर भर रहे है. उनकी बेनामी संपत्ति दो नम्बर के काले धन का विनियोग जमीनों मकानों से लेकर सोना, चांदी, फिल्मों तथा भवन निर्माण के उद्योग में मुनाफाखोरी के रूप में अथवा विदेशी बैंक में जमा है. यह रकम हमारे देश के वार्षिक बजट से भी कई गुना अधिक है. तब देश की गरीबी मिटे तो कैसे? देश की सुरक्षा से लेकर अन्य विकास कार्य बने तो कैसे? प्रतिवर्ष बजट का घाटा और उसकी पूर्ति के लिये नये टैक्स लगते रहते हैं.

आजादी पूर्व अंग्रेजों, रियासतों में राजाओं का शासन था. वहां तब स्कूलों कॉलेजों निजी या सरकारी में, उच्च्व तकनीकी शिक्षा भी सामान्य शुल्क के साथ दी जाती थी. गरीब को निःशुल्क शिक्षा थी. यही बात चिकित्सा के लिए भी सरकारी दवाखानों में मुफ्त चिकित्सा होती थी. परन्तु आजादी पश्चात हमारे बेईमान नेताओं ने स्कूलों का निजीकरण कर दिया. उन स्कूलों कॉलेजों की फीस अब हजारों लाखों में वसूली जाती है. इतना ही नहीं दाखिले के रूप में लाखों का डोनेशन भी लिया जाता है. सरकारी स्कूल कॉलेज भी चल रहे हैं. वहां शिक्षकों प्रेफेसरों को बहुत ही तगड़ा वेतन मिलताा है परन्तु वे वहां पढ़ाई नहीं कराते. ट्यूशन या कोचिंग क्लासों में पढ़ाई के लिए छात्रों को अतिरिक्त खर्च करना पड़ता है. इससे गरीब प्रतिभावान छात्र के लिए तो शिक्षा लेना भी मुहाल हो गया है. यही हाल हास्पीटलों का है. सरकारी दवाखानों में बेपरवाही का इलाज होता है. कहीं डाक्टर नहीं होता तो रोगी को मिलने वाली दवा नहीं होती. जहां मरीज को सही इलाज नहीं मिलता और प्राइवेट हास्पीटलों में चमड़ी चीर इलाज का खर्च वसूला जाता है. सामान्य मरीज के लिए सरकारी अस्पतालों में बेपरवाही की मौत है तो प्राइवेट में इलाज का असहृय खर्च से मरीज मरता है. व्यवहारिक भाषा में आज इलाज से मौत सस्ती पड़ती है. इसके पीछे सरकारी बेईमानी और नेताओं की लूट जिम्मेदार है. सरकार जिसने इस प्रजातंत्र को कल्याणकारी शासन का नाम दिया जहां शिक्षा स्वास्थ्य की व्यवस्था निशुल्क की जानी चाहिए थी परन्तु उसके लिए सरकारी बजट नालियों में जा रहा है. नेताओं ने स्कूलो कॉलेजों को व्यवसाय बना दिया है. उन्होंने स्वयं या अपने रिश्तेदारों या भागीदारों से जुड़कर स्कूलों का निजीकरण कर दिया जहां की फीस को लूट ही नाम दिया जा सकता है. वहां की शिक्षा गरीब मध्यमवर्ग के लिए असंभव होती है. नतीजा बिना शिक्षा के बच्चे गलत रास्ते पर जाते है, अपराध भी इसी से बढ़ रहे है. बच्चों में असामाजिक प्रवृत्तियां बढ़ती जाती है. कारण की बिना शिक्षा के नौकरी नहीं मिलती, बिना काम-धंधे के वे करे तो क्या करें?

ऐसा ही उच्च्व शिक्षा के लिए तकनीकी, वाणिज्य या चिकित्सा आदि विषयों की पढ़ाई की लूट चल रही है. उपरान्त डोनेशन अलग से. डॉक्टरी शिक्षा के लिए फीस तो लाखों में ही है लेकिन डोनेशन करोड़ो में. ये तमाम संस्थान नेताओं या उनसे जुड़े लोगों के है. इतनी महंगी शिक्षा लेकर डॉक्टर क्या सेवा करेंगें? आज जीवन जरुरी हार्ट, कैंसर, किडनी, लीवर, ब्रेन आदि दवाओं की कीमते बेशुमार बढ़ गई है. इन दवा कंपनियों ने डाक्टरों और सरकारी अफसरों व नेताओं से सांठ-गांठ कर रखी है. डाक्टरों को महंगी दवाईया लिखने के बदले विदेश यात्राएं, कीमती मोटरकारों तक की सौगात दी जाती है. ठीक इसी तरह सम्बन्धित मंत्रियों को भी करोड़ों में रिश्वत दी जाती है. काश ऐसी रिश्वत देने की बजाय दवाईयां ही सस्ती कर दी जाती. पर पाप कमाईवाले ऐसा क्यों सोचेंगे? नेताओं ने

सरकार ने हमें आजीवन गुलाम बना रखा है. जहां देखो वहां सरकार और उसके बन्धन नागरिकों को सांस लेना मुहाल कर दिया है. जुल्मी कानूनों से जनता को कभी भी जलील किया जा सकता है. क्या यही जनतंत्र का शासन है?

अपना घर भरने के लिए शिक्षा, चिकित्सा और दवा व्यवसाय को खुली छूट दे रखी है. सरकारी नियंत्रण छोटे व्यवसाई दुकानदारों से लेकर सड़क पर धंधा करने वाले फेरीवालों तक को कानूनी रिश्वत के जाल में फांस रखा है. उन्हें पेट भरने के लिए ईमानदारी से धंधा तक नहीं करने दिया जाता. वहां भी पुलिस का डण्डा और इन्स्पेंक्टरों की रिश्वत चलती है. काश कि यही सरकारी नियन्त्रण शिक्षा स्वास्थ्य और दवा उद्योगों के लिए बनाया जाता. ऐसा अगर करते तो सही माने में कल्याणाकारी शासन बन जाता. पर आज तो सभी लूट में लगे है, डाकूओं को भी पीछे छोड़ दिया है.

एक तरफ देश की एक तिहाई आबादी यानि चालीस करोड़ गरीब जनता गरीबी रेखा के नीचे जीने को मजबूर है जिन्हें भरपेट खाना तक नसीब नहीं होता तो दूसरी तरफ देश की फूड कारपोरेशन का लाखों टन अनाज बिना रखरखाव के बरसात में भीग जाता है या गोदामों में सड़ जाता है. काश कि वह अनाज भी कहीं वास्तविक गरीबों के पेट तक पहुंचता? ऐसा ही सरकारी सहकारिता विभाग है जिसके अर्न्तगत चलने वाले तमाम सहकारी कारखाने, सहकारी बैंक या निगम जिनका अधिकांश संचालन नेता जमात करती है में अरबों, खरबों रूपयों का गबन, घोटाला, भ्रष्टाचार चल रहा है जिसे बजाय रोकने के सहकारिता विभाग को पोसने का काम होता है, उसका घाटा भी जनता के मत्थे बतौर टैक्स के चढ़ता जाता है.

पेट्रोल, डीजल एक ऐसा सरकारी व्यवसाय बन गया है जिसमें आए दिन कीमते बढ़ती जा रही है. उसी को लेकर देश में महंगाई का बोझ बढ़ता जा रहा है. बाहरी दुनियां में पेट्रोल सस्ता होता है तब भी हमारे यहां लूट चलती है. ऊपर से उसमें टेक्स ड्यूटी जरूरत से ज्यादा लग रही है. बल्कि दुनियाभर से भारत में ही पेट्रोल महंगा है. कारण कि पेट्रोल की मूल कीमत से दुगुना सरकारी टेक्स जुड़ा हुआ है. सरकार के तमाम भ्रष्टाचारों की पूर्ति इसी पेट्रोल व्यवसाय से सरकार वसूलती है. जब तब डालर या बाहरी खरीदी महंगी हो रही है कहते हुए पेट्रोल डीजल की कीमते बढ़ा दी जाती है. जब देश में पेट्रोल डीजल का उत्पादन नहीं होता तो वहां तरह-तरह की करीब एक सौ नमूने की मोटर कारें बन रही है या आयात हो रही है. जिनके लिए पेट्रोल का आयात करना पड़ता है तो दूसरी तरफ उन्हें पार्क करने को जगह नहीं है. पहले सड़कों पर गरीब रोजी हेतु फेरी का धंधा करते थे वहां अब कारे सड़के रोक रही है.

अब आते है सरकारी खर्चे के लिए कोई नियन्त्रण नहीं है. कल जो सड़कों पर जूते गांठते थे या रेवड़ी अण्डे या चिवड़ा बेचते थे. वे सब जब सरकार में जाते है तो उनके ठाट बादशाही बन जाते है. साधारण मंत्री जब दौरे पर जाता है तो उनके ठाट बादशाही बन जाते है. साधारण मंत्री के भी दौरे पर जाने पर उसके साथ ५०/६० सरकारी कारों का काफिला चलता है. बड़े मंत्रियों के लिए सरकारी विमान/हेलीकॉप्टर आदि उनके मामूली से मामूली काम को लेकर चलते रहते हैं. कल के सड़क छाप नेताओं का ठाट, उनके मकान और नकद संपत्ति देखते ही बनती है. टेक्स के पैसे को हर कोई हराम का पैसा समझकर उड़ा रहा है. इन तमाम अव्यवस्थाओं के लिए गरीब जनता को तरह तरह के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष टेक्सों का बोझ सहना पड़ता है. तरह-तरह के फरमान द्वारा जनता को जकड़ा जा चुका है. रोज नये नये कानून पारित होते है-उन कानूनों में पीनल कोड, सेल्स टेक्स, इन्कम टैक्स, पोस्टल कानून, इम्पोर्ट एक्सपोर्ट, रेलवे कानून, एक्साइज कानून से लेकर दूसरे अनेक कानून है जिसका ज्ञान किसी जज, वकील को भी नहीं होगा. इतनी गैरजरुरी कानूनी जकड़ जिनमें कई तो १५०/२०० वर्ष पुराने गैर जरुरी कानून भी जनता को जकड़े हुए है तब लगता है कि हमारी सरकार ने हमें आजीवन गुलाम बना रखा है. जनता के निजी जीवन में हर तरह का हस्तक्षेप ही कानून का दुरूपयोग है. तब लगता है जहां देखो वहां सरकार और उसके बन्धन नागरिकों को सांस लेना मुहाल कर दिया है. इन जुल्मी कानूनों से जनता, महिलाएं या परिजनों को जलील किया जा सकता है. उनके घरों में, बेडरूमों में यहां तक सण्डास बाथरूमों तक कहीं भी दबोचा जा सकता है. क्या यही जनतंत्र का शासन है? इसे ही जनता का, जनता द्वार जनता के लिये जनता का शासन कहा जाता है.

१४ अप्रेल अम्बेडकर जयंतिः प्रसंगवश

अहिंसा के उपासक परमवीर महावीर स्वामी

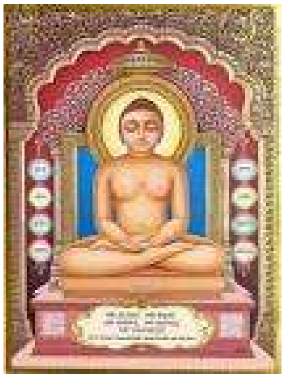

अहिंसा के उपासक परमवीर,
महावीर का अनुसरण करें,
क्षमा, दया, करुणा,
ममता सेवातृत्व भाव पैदा करें।
संयत, तप और ज्ञान साधना से,
शिवपुर का मार्ग प्रशस्त करें,
वीर श्री महावीर प्रभु,
आओ हम सब शत-शत नमन् करें।

जब जब संसार में धर्म की हानि होती है, उसकी रक्षा के लिए प्रभु विभिन्न रूपों में अवतार लेकर आते हैं. व्यक्ति, समाज, राष्ट्र की बहुना अखिल विश्व के धारण, पोषण, संगठन, सामंजस्य एवं एकमत्य का सम्पादन करने वाला एकमात्र पदार्थ है धर्म. मनुष्य को महान बनाने में इसका अपूर्व योगदान रहा है. आज से करीब २६०० वर्ष पूर्व (ईसा पूर्व छठी शताब्दी) भारत की इस पवित्र धरती पर चैत्रशुक्ला त्रैयोदशी के दिन वैशाली नगर के कुण्डलपुर ग्राम (मगध ादेश) जो अभी बिहार प्रान्त में है, ग्यात्रवंशीय काश्यप गौत्र राजा सिद्धार्थ व मात्रा त्रिशला के राजमहल में एक अवतारी पुरूष का जन्म हुआ नाम रखा सिद्धार्थ. इनका विवाह यशोदा नाम की कन्या से हुआ. जिनके एक पुत्री प्रियदर्शना पैदा हुई. ३० वर्ष की अवस्था में सारा वैभव छोड़ कर जगत कल्याण के लिये सन्यासी बन गये. १२ वर्ष तक घोर तपस्या की व १० वर्ष विभिन्न स्थानों का भ्रमण किया. वे धर्म क्षेत्र के वीर, अतिवीर और महावीर थे. अहिंसक बन कर जैन धर्म के २४वें तीर्थकर कहलाये. उनका पांच स्रोत हम सभी को अपनाना चाहिये १-अहिंसा, २-सत्य, ३- अचौर्य, ४-ब्रह्मचर्य ५-अपिरग्रह

इनके सभी संस्कार-कर्मकाण्ड-धर्म आदि हिन्दु धर्म पर आधारित है. जैन धर्म नैतिकता की शिक्षा देता है. उनका कहना है-कष्ट न हो औरों को ऐसे जीये, जीवन रस बांटे सबको, खुद दुःख पीये. भगवान महावीर का सिद्धात उसी तरह है जैसा प्रथम तीर्थकर भगवान ऋषभदेव का. वर्तमान सदी विज्ञान व तकनीकी दृष्टि से चर्म विकास की ओर अग्रसर है पर आध्यात्मिक, सदाचार, धार्मिकता का अभाव है, उसके लिए भगवान महावीर का सिद्धान्त जन-जन तक पहुंचाना है. उनके जीवन से अहिंसा की गंगा, अपरिग्रह की यमुना और प्रेम की सरस्वती पाते हैं. वे अपने पराये, ऊंच-नीच से परे थे, तभी उनके चौदह हजार शिष्य थे. उन्होंने दासी चंदना को दीक्षित किया, हरि केशबल चाण्डाल को संयम देकर आत्म-कल्याण का पथ प्रदान किया. 'जीओ और जीने दो', सर्वे भवन्तु सुखीन, विश्व कल्याण हो, परहित सरित धर्म नहीं भाई, वसुधैव कुटुम्बकू, का सिद्धात अपने जीवन में उतार कर प्रेम, सन्तोष, सरलता, संयम जीवन, सदाचार, पवित्रता के शांति मार्ग पर अग्रसर हो सकते है. इनके सिद्धांत अंधकार में प्रकाश, समुद्र मं नौका

-देवदत्त शर्मा 'दाधीच' छोटी खाटू वाले, जयपुर, राजस्थान, मो० 9414251739

और रेगिस्तान में कल्पवृक्ष के समान है.

जैन धर्म का परम पवित्र और अनादि निर्धन मूलमंत्र है-णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आईदियाणं। णमो उवज्झायाणां। णमों लोएसत्वसाहूणां। इसका अर्थ है जो पांख परमेष्ठी है-अरिहंतो, सिद्धों, आचार्यो, उपाध यायों व सर्व साधुओं को नमस्कार है. वे चाहे किसी भी जाति-धर्म के हो. यह मंत्र सर्व धर्मो में है. अन्याय के प्रति सदा जीवन से लड़ते रहिये. अपनी आबरु पर तनिक भी आंच न आने दीजिये. धैर्य और साहस का संबल पकड़कर कदम बढाईये. भारतीय परम्परा को उच्च शिखर पर चढ़ाईये. महापुरूषों का जीवन का ऐसा रास्ता है जिस पर चल कर समाज आपसी सद्भाव, समता, शांति, भाईचारा से राष्ट्र में व्याप्त भ्रष्टाचार, आतंकवाद, मिलावटवाद, घूसखोरी, भाषावाद, राज्यवाद, जातिवाद एवं भ्रूणहत्या जैसी व्याप्त बुराईयों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं. ७२ वर्ष की आयु में राजगिरी के पास पावापुरी नामक स्थान पर दीपावली की अमावस्या को अपनी देह का त्याग किया और संसार की एक ज्ञान ज्योति ईश्वर में विलीन हो गई. इसी दिन इनका निर्वाण दिवस मनाया जाता है.

स्कूली पाठ्यक्रम में यौन शिक्षा

हमारे राजभोगियों ने प्रत्येक नागरिक को उस नर्क द्वार का अंग बना लिया है. यौन शिक्षा को प्रारंभ से ही मुर्खता का माप दण्ड कहा गया है. कितने सारे पाठ्यक्रम एवं विषय वस्तु परोसे गये स्कूली शिक्षा में? उनका कितना उपयोग शिक्षित वर्ग करता है?

✍**किसान दीवान**, महासमुन्द्र,छ.ग.

यौन अपराधों को नियंत्रित करने की दृष्टि से जस्टिस जे.एस.वर्मा समिति द्वारा केन्द्र सरकार को यौन शिक्षा पाठ्यक्रम लागू करने की सिफारिश की गई है. दिल्ली रेप कैपिटल के रूप में चर्चित होने पर यह सिफारिश नासमझी का नया जुनून है. प्रचलित सरकारी तंत्र में संवेदना, समझ और सजगता सड़ांध की ओर है. जिसमें लोभ-लाचारी, को समाज कल्याण, विनाश, संस्कार-विकार से ढंकते हुए, राजतंत्र का सिक्का जमाया गया है. जिसमें भारतीय शुचिता भाव भूमि का सर्वथा लोप है. पुरानी कहावत है राजभोगी नर्क जाता है. यहां तक कहीं जाने की जरूरत ही नहीं है. बहुत आकर्षक नर्क का निर्माण कर लिया गया है. वस्तुतः भोग लिप्सा ही नर्कद्वार है. हमारे राजभोगियों ने प्रत्येक नागरिक को उस नर्क द्वार का अंग बना लिया है. कोई भी पहरेदार किसी भी हाल में किसी योगी, साधक, सद्गुणी को प्रवेश न करने दे, ऐसी व्यवस्था किया गया है.

यौन शिक्षा के तर्क वितर्क पिछले २० वर्षो से जारी है. प्रारंभ से ही इसे मुर्खता का माप दण्ड कहा गया है. उसे जीवन विद्या के रूप में सार्थक पाठ्यक्रम माना गया है. यौन शब्द योनिगत अंगों पर केंद्रित करता है. वहीं क्यों सिखायेंगे और कौन? क्या वे यौन प्रसंगो से मुक्त होंगें? गांधी जी ने अपने 'यौन मुक्ति' के लिये कई स्त्रियों को 'प्रयोग की वस्तु' बनाया. तब भी वे दावा नहीं कर सके कि यौन प्रक्रियाओं से मुक्त है. जो यौन अपराध और हिंसा होते है, क्या घटना के समय अचानक उभरते हैं? या उनके पिछले आहार-विहार से? राजतंत्र ने सामाजिक सांस्कृतिक एवं नैतिक शक्तियों को दबोच कर पनपाया. कितने सारे पाठ्यक्रम एवं विषय वस्तु परोसे गये स्कूली शिक्षा में? उनका कितना उपयोग शिक्षित वर्ग करता है? नहीं करता तो क्यों? क्या यौन शिक्षा की वर्जनाओं पर अमल होगा? नहीं होगा क्योंकि शिक्षा नीति में खोट है, जिसका निवारण सरकारी तंत्र में नही है. इसे लागू करने से किशोर मन-मष्तिक में दुराग्रह का बवंडर ही मचेगा. जिससे उनमें निहित नैसर्गिक क्षमता कुंठित होगा.

यौन शिक्षा की विविध प्रसंगों/हिस्सों को विज्ञान के शरीर तंत्र तथा अन्य सभी पाठ्य सामग्री में पिरोये जा सकते थे. अलग से विषयवस्तु बनाना हितकर नहीं है. वैसे भी पाठ्यक्रमों में निहित सत्यता, ईमान, धर्म, त्याग, सेवा, प्रेम, सहचर्य आदि का उपयोग कितने लोग करते है? सद् और बद जीवन की सभी पहलुओं में है. आचरण और व्यवहार तो व्यक्ति की अन्तः प्रक्रिया है. जिस पर अंकुश परिवार और समाज ही लगा सकता है. उन्हीं के द्वारा स्वस्थ और सुसंस्कृत नागरिक बनाया जा सकता है. बाकी सब बकवास है.

विश्व स्नेह समाज का आगामी विशेषांक

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी एक व्यक्तित्वः जून 2013

इस विशेषांक हेतु रचनाएं/विचार/लेख/संस्मरण/शुभकामना संदेश 10 मई 2013 तक आमंत्रित है। विलम्ब से प्राप्त रचनाओं पर विचार नहीं किया जाएगा. अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

ईश्वर शरण शुक्ला
संपादकःविशेषांक, हिन्दी दैनिक हिन्दुस्तान कार्यालय, इलाहाबाद,
कानाफूसीः 9935174896

आगामी परिचर्चा का विषयः

विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता कहां तक जायज?

परिचर्चा हेतु अपने विचार अधिकतम 250 शब्दों में 10 मई 2013 तक एक फोटो सहित मेल करें या भेजें। मेल हिन्दी क्रुति देव फान्ट में ही भेजें. अच्छे विचारों को उपहार प्रदान किया जाएगा.

६ सुत्रीय मांगो को लेकर विशाल गोसेवा-गोरक्षा आन्दोलन सम्पन्न

जयपुर, १३.०३.२०१३ को राजस्थान गोसेवा समिति द्वारा आयोजित उद्योग मैदान स्टेच्यू सर्किल पर 'विराट गोसेवा संत सम्मेलन' में लगभग २५ हजार से अधिक गोभक्तों-गोसेवकों ने भाग लिया था। राज्य के कोने-कोने से गोभक्तों-गोसेवकों एवं संतवष्दों पहुंचकर सिद्ध कर दिया है कि पुरे प्रदेश में उपेक्षित, असहाय एवं निराश्रित गोवंश तथा गोसेवी संस्थाओं की स्थिति कितनी विकट है। ऐसे में सरकार ने तत्काल गोशालाओं को स्थाई अनुदान तथा दूरगामी तौर पर गोचर संरक्षण, विदेशी नस्ल प्रतिबन्ध, पंचगव्य विनियोग आदि पर ध्यान नहीं दिया तो आने वाले समय में स्थितियां विकट हो सकती है.

उपरोक्त वक्तव्य श्रीपथमेडा गोधाम लौटने से पूर्व जयपुर में राजस्थान गोसेवा समिति के महामंत्री व प्रवक्ता पूनम राजपुरोहित 'मानवताधर्मी' देते हुए बताया कि १३ मार्च का विशाल आयोजन तो मात्र प्रतिकात्मक था यदि सरकार मुख्यमंत्री से गोसेवक शिष्टमण्डल की हुई वार्ता में लिये गये निर्णयों पर अगले एक माह में सकारात्मक कदम नहीं उठाती हैं तो राज्य के गोभक्त-गोसेवक भारत के इतिहास का सबसे बडा अभूतपूर्व आन्दोलन छेड़ने को मजबुर हो जायेंगे.

श्रीराजपुरोहित जयपुर से चलकर किषनगढ,अजमेर,ब्यावर, सोजत, पाली, आहोर आदि शहरों के गोसेवक कार्यकताओं से मिलते हुए श्रीपथमेडा गोधाम जायेंगे तथा वहां से पुरे राजस्थान की यात्रा पर प्रस्थान करेंगे. उन्होंने प्रदेश में तत्काल अनुदान प्रारम्भ करवाने से लेकर गोचर भूमियों की रक्षा और विकास आदि सभी मांगों को पुरा करवाने तक विश्राम नहीं करने का कहते हुए बताया कि प्रदेश में गोचर की एक ईंच भूमि भी सरकार अथवा किसी को आवंटित नहीं होने दी जायेगी।

मीडिया-<u>प्रेस के असहयोग पर गोसेवकों में क्षोभ, मीडिया से विषय की वृहदता को समझने की अपीलः</u> जयपुर में हुए गोसेवा आन्दोलन के मुख्य रणनीतिकार तथा पुरे प्रदेश का दौरा कर गत एक माह से जयपुर में पुरी बागडेर संभालने वाले पूनम राजपुरोहित ने राष्ट्रीय प्रेस व मीडिया से भी गहरी शिकायत व्यक्त करते हुए कहा है कि आजाद भारत में १९६६ को दिल्ली में हुए गोरक्षा सम्मेलन के बाद जयपुर में १३ मार्च, २०१३ के इस विषाल सफल आयोजन को पुरे मनोभाव से प्रेस व मीडिया ने जनसाधारण तक नहीं पहुंचाया है। उन्होंने मीडिया-प्रेस से अपील की है कि गोसंरक्षण, गोसंवर्धन, गोपालन, पंचगव्य परिश्करण एवं विनियोग जैसे सार्वभौमिक, सम्पूर्ण मानव जाति व प्रकृति के लिए अतिआवश्यक विषय पर खुले हृदय युक्त तथ्य, तर्क व प्रमाण के साथ विषय की महता, उपादेयता और आवश्यकता को समझने की कृपा करें. मुख्यमंत्री से मिले प्रतिनिधि मण्डल के प्रमुख वार्ताकार पूनम राजपुरोहित ने गोसेवकों के प्रतिनिधि मण्डल द्वारा विधानसभा में मुख्यमंत्री से हुई वार्ता तथा सौंपे गये ज्ञापन पर भी प्रकाश डाला .

१३ मार्च, २०१३ <u>को मुख्यमंत्री से हुई वार्ता का संक्षिप्त सार, संयुक्त समिति का हुआ निर्णयः</u>राजस्थान गोसेवा समिति के महामंत्री एवं प्रवक्ता श्रीराजपुरोहित ने बताया कि प्रतिनिधि मण्डल ने पुरे प्रदेश के सम्पूर्ण उपेक्षित, असहाय एवं निराश्रित गोवंष का संरक्षण, सम्पोषण, संवर्धन और पंचगव्य विनियोगनार्थ सदैव से रही अपनी ६ सूत्रीय मांगों के क्रियान्वयन का मुख्यमंत्री से दृढ़तापूर्वक आग्रह किया. वार्ता में मुख्यमंत्री ने अगले अगले १० दिनों में राजस्थान गोसेवा समिति एवं सरकार की संयुक्त समिति का गठन करने

तथा ३३ जिलों की गोशालाओं को अनुदान प्रारम्भ का वचन दिया है। मुख्यमंत्री ने नव घोषित 'गो निदेशालय'' में २५ करोड़ से राशि बढ़ाने तथा तेजी से इसके व्यवहारिक क्रियान्वयन को प्रारम्भ करने तथा इसके अन्तर्गत ६ सूत्रीय समस्त मांगों का समग्र रूप से समाधान योग्य नीति-रीति बनाने का विश्वास दिलाया है। मुख्यमंत्री को सौंपे ज्ञापन में अत्यन्त स्पष्ट भाषा में गोसेवकों ने अपनी पीड़ा व चेतावनी को रखा है। यदि सरकार सकारात्मक कदम नहीं उठाती है तो अभूतपूर्व आन्दोलन होना निश्चित.

प्रखर वक्ता एवं सुप्रसिद्ध गो विषयक श्रीराजपुरोहित ने बताया कि ज्ञापन में स्पष्ट कर दिया गया है कि गोवंश की रक्षा तथा गोसेवा अत्यन्त संवेदनशील, मानवीय व आध्यात्मिक विषय है, सरकार इसको अन्य आर्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक विषयों की तरह दाव पेंच में उलझाने और लम्बे समय तक लटकाने तथा उपेक्षा करने की भूल न करें. इसमें किसी का व्यक्तिगत, राजनैतिक, सामाजिक व आर्थिक स्वार्थ नहीं है. इसका समाधान अत्यन्त सजगता के साथ संवेदनशीलता पूर्वक अविलम्ब किया जाय अन्यथा सब कुछ नियंत्रण से बाहर हो जायेगा. गोरक्षा एवं गोसेवार्थ भौतिक जीवन को आत्मोत्सर्ग मार्ग पर समर्पित करने की सनातन धर्म में शास्त्रीय परम्परा रही है और व्यवहारिक समाधान नहीं मिलेगा तो आत्मोसर्ग का मार्ग ही पेश रहेगा. श्रीराजपुरोहित ने बताया कि यदि सरकार अब भी किसी प्रकार से उपेक्षा का भाव रखेगी तो अगला आन्दोलन पुरे प्रदेष में गोवंश के साथ उतरकर होगा, ऐसा हमने ज्ञापन पत्र में स्पष्ट कर दिया है।

निम्न प्रमुख मांगों पर संयुक्त समिति

पत्रिका के प्रकाशन के १२वर्ष पूरे होने पर विशेष प्रस्ताव

सदस्यता ग्रहण करें और सदस्यता शुल्क के बराबर मूल्य की पुस्तकें मुफ्त प्राप्त करें

सदस्यता प्रपत्र

महोदय,

मैं विश्व स्नेह समाज का, एक साल, 5 साल, आजीवन एवं संरक्षक सदस्यता शुल्क रुपये .... नकद / धनादेश / चेक / बैंक ड्राफ्ट / पे इन स्लिप द्वारा भेज रहा / रही हूं कृपया मुझे 'विश्व स्नेह समाज' के अंक नियमित रूप से भिजवाते रहें.

1. बैंक ड्राफ्ट क्रमांक..................................दिनांक...........
बैंक का नाम..
2. धनादेश क्रमांक....................................दिनांक...........

हस्ताक्षर

नाम :..
पता :..
....
....पिन कोड...........
दूरभाष / मो0..........................ईमेलः...............................

विशेष नियमः

01 नवीकरण हेतु शुल्क भेजते समय कृपया सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें, जो पत्रिका भेजते समय आवरण लिफाफे पर आपके नाम के ऊपर लिखा होता है.
02 कृपया अपना नाम व पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें. उत्तर प्रदेश के बाहर के चेक भेजते समय बैंक शुल्क जोड़कर भेजें.
03 सदस्यता शुल्क यूनियन बैंक के खाता क्रमांकः538702010009259 आईएफएससीस कोड (आरटीजीएस): UBIN0553875 में जमा कर जमा पर्ची की छाया प्रति कार्यालय को प्रेषित कर सकते हैं.
04 आजीवन सदस्यों का सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय प्रकाशित किया जाता है व संस्थान के प्रकाशनों में 25प्रतिशत की छूट प्रदान की जाती है.
05 सरंक्षक सदस्यों का नाम प्रत्येक अंक में मोबाइल नं0 सहित प्रकाशित किया जाता है तथा सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय भी प्रकाशित किया जाता है.

सदस्यता प्रकार	शुल्क(भारत में)	शुल्क (विदेशों में)
एक प्रति :	रु0 10 / –	$ 1.00 /
वार्षिक	रु0 110 / –	$ 5.00 /
पाँच वर्ष :	रु0 500 / –	$ 150 /
आजीवन सदस्यः	रु0 1100 / –	$ 350 /
संरक्षक सदस्यः	रु0 5000 / –	$ 1500 /

विश्व स्नेह समाज(एक रचनात्मक क्रान्ति)

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011, उ.प्र. ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

करेगी कार्यः श्रीराजपुरोहित ने बताया कि शीघ्र ही सरकार एवं गोसेवकों की संयुक्त समिति गोवंश संरक्षण अधिनियम को सशक्त बनाकर गोतस्करी पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने, गोभूमियों का सीमांकन एवं विकास करने, राज्य में निराश्रित, उपेक्षित व असहाय गोवंश का पालन करने वाली गोशालाओं तथा गोपालकों को गोसेवार्थ चारा, दाणा, दवाई हेतु निरन्तर अनुदान प्रदान करने, गोसंवर्धनार्थ संकरीकरण पर पूर्ण प्रतिबन्धा लगाने, नस्लविहीन, कमजोर व नाकारा नर गोवंश का एक वर्ष की उम्र तक बन्धियाकरण कर उनके संरक्षणार्थ गोवंश अभ्यारणयों की स्थापना करने, सांचोरी, कांकरेज, थारपारकर, राठी, रेड्डी आदि भारतीय नस्लों के उन्नत नन्दी लाकर ग्राम पंचायत स्तर पर नन्दीशाला तथा गोसदन स्थापित व संचालित करने और विधिपूर्वक पंचगव्य अनुसंधान व विनियोग सहित उपरोक्त सभी बिन्दुओं के सफल क्रियान्वयन हेतु स्वतन्त्र **''गोपालन मन्त्रालय''** का गठन की दिशा में आगे बढेगी.

ये आग कब बुझेगीः04 हेतु रचनाएँ आमंत्रित हैं

ऊपर उद्धृत संग्रह मुख्य रूप से भ्रष्टाचार, शिक्षा, आतंकवाद व सामाजिक समस्याओं से सरोकार रखने वाले, विषयों से संबंधित आलेख/व्यंग्य/कहानियाँ/कविताएँ/ग़ज़ल/दोहे आदि आमंत्रित हैं. इस बात का विशेष ध्यान रखें कि रचनाएँ 1500 शब्दों से अधिक की न हो. सचित्र जीवन परिचय एक रचना तथा 250/-रुपये अथवा तीन रचनाएं 500/- रुपये सहयोग राशि के साथ 30 सितम्बर 2013 तक अपेक्षित है. अपनी सहयोग राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता **सं०ःएस.बी. 538702010009259** में अथवा धनादेश/डी. डी. सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से दे सकते हैं. अपनी रचनाएं निम्न पते पर प्रेषित करेंः

प्रसार सचिव,
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी—93,
नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद—211011
ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com

आवश्यक सूचना

पत्रिका के 12वर्ष पूरे करने पर सदस्यों के लिए विशेष योजना 15.06.2013 तक वार्षिक सदस्यता ग्रहण करने वाले सदस्यों को विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित श्री बालाराम परमार 'हंसमुख' पुणे महाराष्ट्र की कृति 'नेता व्याजस्तुति और जागो भाग्य विधाता की प्रति मुफ्त प्रेषित की जाएगी. इस योजना का लाभ उठाने की शीघ्र अपना सदस्यता फार्म भर कर भेजें

भ्रष्टाचार से त्रस्त भारत

जीप घोटाला-1948, साईकिल आयात घोटाला-1951, मुंध्रा मैस—1957—58, तेजा लोन-1960, पटनायक मामला-1965, नागरावाला घोटाला—1971, मारुति घोटाला, कुओ ऑयल डील—1976, अंतुले ट्रस्ट—1981, एचडीडब्ल्यू सबमरी घोटला—1987, बिटुमेन घोटाला, तांसी भूमि घोटाला, सेंट किट्स घोटाला-1986, एयरबस स्कैण्डल—1990, इंडियन बैंक घोटला, हर्षद मेहता घोटाला, सिक्योरिटी स्कैम-1992, जैन हवाला डायरी कांड—1993, चीनी आयात—1994, बेंगलौर-मैसूर इंफ्रास्ट्रक्चर, जेएमएम सांसद घूसकांड—1995, यूरिया घोटाला, संचार घोटाला, चारा घोटाला, लखुभाई पाठक पेपर स्कैम-1996, ताबूत घोटाला—1999, मैच फिक्सिंग—2000, यूटीआई-घोटाला, केतन पारेख कांड, बराक मिसाइल डील, तहलका स्कैंडल—2001, होम ट्रेड घोटाला—2002, तेलगी स्टाम्प स्कैंडल—2003, तेल के बदले अनाज कार्यक्रम—2005, कैश फार वोट स्कैंडल, सत्यम घोटाला, मधु कोड़ा मामला—2008, आदर्श सोसायटी मामला, कॉमनवेल्थ घोटाला, २जी स्पेक्ट्रम घोटाला—2010, नेशनल रुरल हेल्थ मिशन घोटाला, एयर इंडिया एंड इंडियन एयरलाइन्स घोटाला, कावेरी बेसिन डी ब्लाक घोटाला, एंट्रिक्स देवास घोटाला—2011, पावर प्रोजेक्ट घोटाला, इंदिरा गांधी एयरपोर्ट घोटाला, कोयला घोटाला, लौह अयस्क घोटाला-2012

भ्रष्टाचार के उपरोक्त आंकड़ों पर अगर गौर करें तो यह तो साफ ही है कि चाहें केंन्द्र व राज्यों में सरकारें किसी की रही हो घोटाले हुए हैं. बस 19, 20 व 21 के आकंड़े रहे हैं. जरुरत है इन घोटालेबाजों को दूर भगाने की.

परीक्षा

एक बार राजा भोज और पंडित माघ घुमते हुए उज्जयिनी से बहुत दूर जा निकले।

लौटते हुए वे रास्ता भूल गए। भटकते-भटकते वे एक झोंपड़ी में पहुँचे. झोंपड़ी की मालकिन एक बुढ़िया थी. उससे उन्होंने पूछा-माँ! यह रास्ता कहाँ जाता है?

बूढी स्त्री दोनों व्यक्तियों को ध्यान से देखती हुई बोली-'यह रास्ता तो कहीं नहीं जाता. हाँ इस पर लोग आया-जाया करते हैं. आप लोग कौन हैं?

माघ ने कहा-'हम यात्री हैं।'

यात्री! बुढ़िया बोली-यात्री तो सिर्फ दो हैं-सूर्य और चाँद. आप कैसे यात्री हुए? सच-सच बताइए, आप लोग कौन हैं?

हम क्षणभंगुर मनुष्य हैं! संसार में क्षणभंगुर तो बस दो ही वस्तुएं हैं-धन और यौवन।

प्रश्नोत्तर में राजा भोज और माघ जैसे हार गए. फिर भी बोले-हम राजा हैं. बुढ़िया ने कहा-राजा भी सिर्फ दो ही होते हैं! इन्द्र और यम. आप कैसे राजा हैं?

माघ ने देखा, बुढ़िया का ज्ञान साधारण नहीं है. संभल कर बोले-हम क्षमावान हैं।

भाई! क्षमावान तो एक पृथ्वी है, और दूसरी नारी. आप लोग तो इन दोनों में से कोई भी नहीं लगते हैं.

भोज और माघ कुछ घबराए. फिर भी धैर्यमय संयत स्वर में बोले-माँ! हम परदेसी हैं. असम्भव! परदेसी भी सिर्फ दो होते हैं. एक जीवन, दूसरा पेड़ के पत्ते.

राजा भोज और माध ने पूरी तरह हार मान कर सिर झुका लिये. अपने अज्ञान को स्वीकार करते हुए बोले-माँ! हम तो हार गए।

बुढ़िया ने इसे भी स्वीकार नहीं किया। फिर बोली-हारे हुए व्यक्ति भी सिर्फ दो ही होते हैं-एक तो कर्जदार और दूसरा लड़की का पिता. सच-सच बतलाईये, आप लोग कौन हैं?

राजा भोज और पंडित माघ लज्जित भाव से चुप-चाप मौन खड़े रहे.

तब बुढ़िया स्त्री मुस्कुरा कर बोली-मैं जानती हूँ आप राजा भोज हैं और आप पंडित माघ....कृपया जाईये यह राह सीधी उज्जयिनी जाती है.

-प्रस्तुतकर्ता-शिवम वर्मा,
श्रीजी निवास, जवाहर मार्ग, जैन कॉलोनी, नागदा जंक्शन, म.प्र.

हिन्दी में सर्वाधिक अंक पाने वालों को छात्रवृत्ति

हिन्दीत्तर भाषियों को सुश्री शांताबाई व हिन्दी भाषी राज्यों में स्व.पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति हिन्दी छात्रवृत्ति इंटरमीडिएट व स्नातक स्तर पर हिन्दी विषय में 80प्रतिशत अंक पाने छात्र/छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी. इसमें छात्र/छात्रा को इंटरमीडिएट व स्नातक स्तर के अंक पत्र की प्रधानाचार्य/प्राचार्य/विभागाध्यक्ष से प्रमाणित छाया प्रति, नाम, पिता का नाम, सम्पूर्ण पता, एक फोटो, दूरभाष/मोबाइल संख्या/ई मेल के साथ ३० अक्टूबर 2013 तक भेजना होगा. इसमें चयनित छात्रों को 100 रुपये से लेकर 500/रुपये मासिक तक की छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी.

विशेषः 01 छात्रवृत्ति की संख्या का निर्धारण संस्थान द्वारा प्रत्येक वर्ष किया जाएगा। 02 हिन्दीत्तर भाषी छात्र/छात्राओं को वरीयता दी जाएगी. प्रत्येक वर्ष अंक पत्र भेजना अनिवार्य होगा. तब तक हिन्दी विषय में 80प्रतिशत या उससे अधिक अंक मिलते रहेंगे यह छात्रवृत्ति जारी रहेगी. 03 विवरण के साथ एक नाम पता लिखा लिफाफा, व २५ रुपये का डाक टिकट भेजना होगा. 04 जिस विद्यालय के छात्र/छात्राओं का चयन लगातार पांच वर्ष तक होगा उस विद्यालय के हिन्दी विषय के प्राध्यापक/विभागाध्यक्ष को भी सम्मानित करने की योजना है. 05 जो प्रतिभागी लगातार तीन वर्ष तक यह छात्रवृत्ति प्राप्त करेगा उसे हिन्दी उदय सम्मान से एक गरिमामय कार्यक्रम में सम्मानित भी किया जाएगा.अन्य किसी प्रकार की जानकारी व प्रस्ताव के लिए निम्नलिखित पते पर लिखेंः

सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,

एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011, उ.प्र.मो० 09335155949

email:sahityaseva@rediffmail.com

कविताएं

सरिताएं निनाद करें कल-कल,
जहँ भूधर भाल अनन्त ऊँचाई।
मष्ण वन विचरें, अरु बाग बिहंग,
घुली मिसरी जहं नीर मिठाई।।
स्वर्ण खदानें औ 'सोने सी धानें,
समुन्दर पोखर, सिद्ध बुढ़ाई।
''राजगुरू'' नमों भारत को,
नित सूरज चाँद करें रोशनाई।।

2

साधु औ' श्रावक, भिक्खु पुनीत,

भारत-वन्दना

जहाँ मन जीत ऋचाएं रचाई।
मन्दिर, चैत्य, बिहार सँभार,
उचार करें प्रभु की प्रभुताई।।
जहं तोड़बे दम्भ, हो खम्भ भी ब्रह्म,
औ''''नाग को पूजत दूध पिलाई।
''राजगुरू'' नमो भारत को,
जहँ-नन्दी में धम्म, अरु गाय है माई।।

3

पेड़ औ' पौधे पुजें, औ'भजें खग,
काक भी ज्ञानी, बराह-खुदाई।
हल जोते पजें तन, मूशक वाहन,
देत कबूतर डाक भिजाई।।
साल चतुर्दष राज सिंहासन-
बैठ खड़ांउ लें राज चलाई।
''राजगुरू'' नमो भारत को,
जहं बानर देत हैं लंक जराई।।

-आचार्य शिवप्रसादसिंह राजभर
'राजगुरु', जबलपुर, म.प्र.

तहश-नहश कर दे ऐसी व्यवस्था को

आज का नौजवान
पूरी तरह से
हो गया है निराष,
डिग्रियाँ लेकर भी
नौकरी मिलने की
नहीं है उसे कोई आस।
जहाँ-वहाँ कई जगह
टेकता है माथा
और प, ता है कई मंत्र,
साक्षातकार-पत्र तक
उसे प्राप्त नहीं होता
यह कैसा है लोकतन्त्र।
अपने पे भरोसा है जिन्हें
वे कायर नहीं होते,
माना कि बाधाएँ बहुत हैं
हमारे देष में,
बाधाएँ देखकर
जो रूक जाए
वो माहिर नहीं होते।
ऐ नौजवान!
उठ, माहिर बन और
गांडीव उठा ले
व तहष-नहष कर दे
ऐसी व्यवस्था को
जो तुझे एक नौकरी न दिलाए,
तहष-नहष कर दे 'लाडी' तू
ऐसी व्यवस्था को
जो तुम्हारी व्यथा को
समझ न पाए।

-अमित कुमार लाडी, फरीदकोट, पंजाब

जंग

जंग हो उमंग से,
डरो ना कभी तंग से।
डर कैसा भुजंग से,
साथ करो सत्संग से।।
हिम्मते है मर्द से,
कह दो तुम गर्व से।
जंग हो उमंग से...........।।
लिपटी सुमन है कांटो से,
डर नहीं अघातों से।
मनुष्यता विनम्र से,
समानता है झील से।।
करो स्नेह कर्म से,
डगमग हो ना धर्म से।
जंग हो उमंग से...........।।
सुख है सन्तोष से,
दु:ख असन्तोष से।
विनाश अभिमान से,
विकास स्वाभिमान से।।
डडरो सदा अपमान से,
ना किसी बलवान से,
नना किसी बलवान से
जंग हो उमंग से...........।।

-विवेकानन्द शर्मा 'विवेक'
ग्राम-रामबाग हरखौली, पोस्ट-लार रोड, देवरिया, उ.प्र.२७४५०५

सूर्य नारायण 'शूर'

ये क्या हाँ कहा और मुकर जाइये।
निगाहों से दिल में उतर जाइये।
मुहब्बत हमें आपसे है बहुत।
यहीं आके अब हम पे कर जाइये।
शरारत के दिल में जले दीप हैं।
और रोशनी उनमें भर जाइये।
ये आँखें तुम्हें खोजने में लगी हैं।
इन्हें हो सके तो नज़र आइये।
सनम दम निकलने को तैयार है।
गुजारिश है फिर से संवर जाइये।।

०२

हम किसानों के दिल से जरा पूछिये।
कितनी पाई है हमने सजा पूछिये।
चोट मौसम ने जब-जब दिया है हमें,
कैसे हमने सहा है भला पूछिये।
सूख जाती है खेती अगर अपनी तो
बिन पिये कितना होता नशा पूछिये।
रूठा बादल तो आती नहर भी नहीं,
हाल रहता है फिर तो बुरा पूछिये।
पेट अपना भरूँ या कि पशुओं का मैं,
सूखे में पड़ता है सोचना पूछिये।

-मेजा, इलाहाबाद, मो० ६३३५८७८०८६

कविताएं

श्रृंगार

मुस्कराओ तुम तो छवि इन्द्र धनुष बन जाए।
मेरे प्राण हंसो इतना पवन में पागलपन लहराए।।
परवसता की तोड़ बेड़ियां आज तो आजाओ,
मिटे दुइ का भेद प्राणों में प्राण समाजाए।।

२.

पावस आया कुछ कर गया बगिया का बदन गीला गीला है।
जैसे आया कान्हा बांसुरी ले राध संग कर गया रासलीला है।।
कमर की मथनी मथते मथते सयानी हो गइ रे लाला,
तन पर क्रूर दृष्टि पड़ी तो क्या मन तो अभी रंगीला है।

३.

देखी सब राहें मुड़ मुड़ कर तेरी गली आती है।
पिक के पच्चम स्वर में तू गीत गुनाती आती है।।
गेन्दा गुलाब गुलमोहर चम्पा चमेली सब फूल,
जिसे भी धूआ सबमें तेरी महक आती है।

-वंशी लाल **'पारस'**, भीलवाड़ा, राजस्थान

अशोक गुलशन

बहुत दिन हो गए आँखों में वो मंजर नहीं आते,
तुम्हारी याद के चेहरे हमारे घर नहीं आते.
हुआ है हाल ये अपना जो तुमसे दूर हो करके,
लिए अब हाथ में दुष्मन कभी खंज़र नहीं आते.
समय के साथ मिलकर काम करना बुद्धिमानी है,
हमेशा जिन्दगी में एक से अवसर नहीं आते.
तुम्हारे प्यार के ख़त को लगा दी है नज़र किसने,
बहुत दिन से कबूतर अब हमारे घर नहीं आते.
भला कैसे करे अब बात कोई डूब जाने की,
हमारी आंख में अश्कों के अब सागर नहीं आते.
बहुत है दूर मंजिल चल रहे हैं हम अकेले ही ,
सदायें सुन के भी नजदीक अब रहबर नहीं आते.
हुए हमदर्द दुश्मन भी जुदाई में जरा देखो,
तुम्हारे बाद छत पर अब कभी पत्थर नहीं आते .
न जाने क्या खता कर दी है हमने प्यार में 'गुलषन',
जिन्हें यह जिन्दगी सौंपी वाही दिलवर नहीं आते.

हंसना मना है

डाकुओं ने बैंक के कैशियर को बॉध दिया. कैश लूटकर डाकू जाने वाले थे कि कैशियर ने गिड़गिड़ाकर कहा-मित्रों! कृपा करके रजिस्टर भी साथ लेते जाओ. मेरा हिसाब में चालीस हजार की गड़बड़ है.

क्यों लगा मौत को जगाने में क्या जीना नहीं चाहता है

आंशु निकल आते है, कलेजा फट जाता है, रूह कांप जाती है
जिसको गले से लगाया हमने, जिसपे विश्वास किया हमने
जिसको मेहमान बना हमने, जिसकी अगुआई की हमने
तोड़ा विश्वास उसी ने अपना, छल्ली किया उसी ने सपना
कर तोड़ हजारो वादों को, यादे नसले वो जताते है
मेरे घर में वो बताते है,
(पाकिस्तान) हम अन्न जहां का खाते है
आतंक वहां से आते है, तुमको तो पता है सब लेकिन
हम नाको चने चबवाते है, कर दिया कलम सर वीरों का
सर काट के हम ले जाते है, हम तुमको बताना चाहते है
हम मस्तक कुचलना चाहते हैं
(भारतमाता) कान खोल सुन पाकिस्तान, ये धरती कृष्ण राम की है
हम कीड़ो को नहीं कुचलते, इतिहास हमारा कहता है
जब क्रोध भरत को आता है, जब घड़ा पाप का भरता है
जब अंत समय आ जाता है, तब दिया जोर से जलता है
वो जीना बहुत चाहता है, अपने बारे में जानता है
क्या हश्र होने वाला है, इन सब को वो पहचानता है
जब अंत निकट आ जाता है, तब त्राहि त्राहि चिल्लाता है
अवकात में रह ए बिछड़े दोस्त, हमे भी हथियार उठाना आता है
जब जब धरती हिलती है, तूफान खड़ा हो जाता है
अम्बर की गर्जना सुनकर, कर्ण हृदय फट जाता है
क्यों लगा मौत को जगाने में, क्या जीना नही चाहता है
घर में घुस कर मारा हमने, इतिहास दुहराना चाहता है
कदमों में खड़ा हो पहले तो, हमने झगड़ना चाहता है
क्यों लगा मौंत को जगाने में क्या जीना नहीं चाहता है

-ओंकारेश्वर पाण्डेय, नोयडा, उ.प्र.

हंसना मना है

एक साहब ने पंडित जी को घर बुलाकर खाना खाने के लिए कहा. जब उन्होंने काफी खा लिया तो पेट की तरफ इशारा करते हुए कहा-बस भर गई है.
इसके बाद उसने मलाई से भरी प्लेट लाकर दी तो वह भी उन्होंने खा ली. उन साहब ने कहा-पंडित जी आपकी बस तो भर गई थी तो अपने मलाई कैसे खा ली.
पंडित जी नम्रता से बोले-यजमान, बस तो भर गई थी लेकिन कण्डक्टर की सीट खाली थी.

सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान** द्वारा 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

01-**कैलाश गौतम सम्मान**-(हास्य/व्यंग्य रचना), 02-**डॉ.किशोरी लाल सम्मान**-(श्रृंगार रस की रचना), 03—**हिंदी सेवी सम्मान**- (विदेशी/अहिन्दी भाषी नागरिक-किसी भी विधा की रचना), 04-**राजभाषा सम्मान**-(सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए). 05-**राष्ट्रभाषा सम्मान**-(अहिन्दी भाषी क्षेत्र में हिंदी के उत्थान के लिए) 06-**कला/संस्कृति सम्मान**-(संगीत, नाटक, पेंटिंग, नृत्य आदि के क्षेत्र में उत्कृष्ठ योगदान के लिए), 07-**बाल साहित्यकार सम्मान**-(उम्र २१ वर्ष)-किसी भी विधा की एक रचना, 08- **राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान**-(हिन्दी सेवा के साथ-साथ किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, प्रमाणिक विवरण) 09-**राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान**-(उम्र ३५ वर्ष से कम किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान, प्रमाणिक विवरण), 10-**पुलिस हिंदी सेवा सम्मान**-(पुलिस सेवा में रहते हुए हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए), 11-**सांस्कृतिक विरासत सम्मान**-(भारतीय/स्थानीय संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए, प्रमाणिक विवरण) 12-**प्रवासी भारतीय सम्मान** (प्रवासी भारतीय जो हिंदी की किसी भी विधा में लिख रहे हों.) 13-**युवा कहानीकार/युवा व्यंग्यकार/युवा कवि सम्मान**-(उम्र ३५ वर्ष से कम) 14-काव्यश्री 15-कहानीश्री, 16-ग़ज़लश्री, 17-दोहाश्री, 18-**विधि श्री** (विधि प्रक्रिया में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए), 19-**डॉक्टरश्री** (डॉक्टरी पेशे में रहते हुए हिंदी की सेवा के लिए)20-**शिक्षकश्री** (शिक्षा के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए)21-**सैनिक श्री** (सैन्य सेवा में कार्य करते हुए हिंदी सेवा के लिए),22-**विज्ञान श्री** (विज्ञान वेत्ता जो विज्ञान को हिंदी में बढ़ावा दे रहे है) 23-**प्रशासक सम्मान/प्रशासकश्री** (कुशल प्रशासन अथवा किसी भी प्रकार से हिंदी को बढ़ावा देने के लिए) 24-**विहिसा अलंकरण**-हिन्दी की किसी भी विधा में प्रकाशित/अप्रकाशित 100 पृष्ठों की एक किताब के लिए,

उपाधियां उपाधियां प्रकाशित/अप्रकाशित कम से कम १०० पृष्ठीय कृति पर ही प्रदान की जायेगी. **साहित्य के क्षेत्र में**: साहित्य भूषण, साहित्य शिरोमणि, साहित्य सम्राट, कहानी सम्राट, कहानी रत्न, काव्य रत्न, काव्य श्री, काव्य शिरोमणि, दोहा श्री, ग़ज़ल श्री **समाज के क्षेत्र में**: समाज शिरोमणि, समाज रत्न, समाजश्री, **पत्रकारिता के क्षेत्र में**: पत्रकार शिरोमणि, पत्रकार रत्न, पत्रकारश्री

विशेषः१. प्रत्येक प्रविष्टि के साथ सम्बन्धित विधा की एक रचना, विवरण के सम्बंध में प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में तथा साथ एक पोस्ट कार्ड, एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका और २०० रुपये मात्र का धनादेश/ बैंक ड्राफ्ट/ मल्टी सिटी चेक अथवा **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** की किसी भी शाखा से **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'** के नाम से **खाता संख्याः 538702010009259** में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा.

२. प्रतिभागी सभी साहित्यकारों को राष्ट्रीय हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' की वार्षिक सदस्यता निःशुल्क प्रदान की जाएगी. जो जनवरी 2014 से लागू होगी. किसी भी दशा में रचनाएं व सहयोग राशि लौटाई नहीं जाएँगी.

३. रचनाओं के साथ मौलिकता को दर्शाना अनिवार्य होगा. प्रत्येक पृष्ठ पर अपने हस्ताक्षर अवश्य करें. संस्थान को प्राप्त रचनाओं को प्रकाशित करने का अधिकार होगा. किताबों पर हस्ताक्षर न करे। सम्मान किसी भी परिस्थिति में डाक से प्रेषित नहीं किया जाएगा और न अपूर्ण प्रविष्टियों पर विचार किया जाएगा. प्रविष्टि भेजने के पूर्व मांगी वांछित सामग्री को सुनिश्चत करलें

४. प्रत्येक सम्मान के लिए एक विद्वजन का ही चयन किया जाएगा जो सर्वोच्च होगा. पुरस्कारों हेतु चयन एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा जो अंतिम व सर्वमान्य होगा. इसमें किसी भी प्रकार की शिकायत स्वीकार्य नहीं होगी. किसी प्रकार

के विवाद के संबंध में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद होगा. सम्मान समारोह इलाहाबाद में आयोजित किया जाएगा. चयनित सभी विद्वद्जनों को डाक से/दूरभाष/ई-मेल के माध्यम से सूचना दी जाएगी.

अंतिम तिथिः ३० अक्टूबर २०१३

अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करेंः-

सचिव, **विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,**
एल.आई.जी-६३, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११, उ.प्र.
मो०: ०६३३५१५५६४६, ईमेल-sahityaseva@rediffmail.com

सम्मान हेतु आवेदन पत्र

सेवा में

सचिव
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान
इलाहाबाद

विषयः ....सम्मान/उपाधि हेतु प्रविष्टि संदर्भः
महोदय,

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा प्रदान किए जाने वाले...सम्मान/उपाधि हेतु मैं अपना आवदेन प्रस्तुत कर रहा हूं। मेरा आत्म विवरण निम्नवत हैः-

नामः ....पिता/पति का नामः...
पताः..
....
दू०/मो०संख्या..........................ईमेल-...........................
रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि का शीर्षकः...विधा....................वर्ष..........................
प्रेषित प्रतियाँ............. धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/डीडी/चेक का विवरण, राशि.....................बैंक का नाम..........................
संख्या.......................

मैं शपथपूर्वक यह प्रमाणित करता/करती हूं कि ०१ प्रेषित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि मेरी मौलिक है. इसमें किसी भी प्रकार का विवाद होने पर मैं स्वयं जिम्मेदार होऊंगा. ०२ मैंने संस्थान के पुरस्कार/सम्मान संबंधी नियम पढ़ लिए हैं और मुझे स्वीकार्य है.

प्रस्तावक
नाम.............................
हस्ताक्षर..........................
पूरा पता.......................

भवदीय/भवदीया
हस्ताक्षर....................................
पूरा नाम....................................

सलंग्नक
०१ सचित्र जीवन परिचय-एक प्रति ०२ टिकट लगा लिफाफा/पोस्टकार्ड-एक ०३ धनादेश/बैंक जमा पर्ची छाया प्रति-एक
०४ सम्बन्धित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि- तीन प्रतियों में

'अपनी कलम' हेतु रचनाएँ आमंत्रित हैं

काव्य खंड के लिए के लिए १० गीत/१०ग़ज़ल/१० नई कविताएं,/१००दोहे **गद्य खण्ड** के लिए ५ लेख/५ संस्मरण **कहानी खंड** के लिए ५ कहानियां/१० लघु कथाएं

प्रत्येक खण्ड के लिए प्रत्येक रचनाकार को १५ पृष्ठ दिए जाएंगे. सहयोगी आधार पर प्रकाशित होने वाले इस संकलन के लिए रचना के साथ, सचित्र जीवन परिचय, व १५००/रुपये 30 सितम्बर 2013 तक अपेक्षित है. (अपनी सहयोग राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता सं०ःएस.बी. 538702010009259 में अथवा धनादेश/डी.डी. सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से दे सकते हैं.) अपनी रचनाएं निम्न पते पर प्रेषित करेंः

प्रसार सचिव,
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी—93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद—211011
इमेलः sahityaseva@rediffmail.com

कहानी

सार्थकता

-डॉ०मोहन तिवारी 'आनंद',
भोपाल, म.प्र.

आगन में धूप पसर चुकी थी और नींद की गोद उन्हें अभी समेटे हुए थी तभी गिरजा ने दरवाजे पर दस्तक दी. बुआ चटक कर उठी. मुँह पर छींटे मारे और उसी हालत में दरवाज़ा खोलने पहुँच गई.

''अरी बुआ आज इतनी देर तक.''

''धीरे बोल मैंड़म सो रही हैं.''

''आज अस्पताल नहीं जाना है क्या?''

आठ बज गए हैं. तब तक सुषमा की भी नींद खुल चुकी थी. वह सीधी बाथरूम में गई और तैयार होने लगी. गिरजा ने जल्दी-जल्दी काम निपटाया तथा नाश्ता तैयार कर दिया.

''आज बड़ी देर हो गई बुआजी मैं जा रही हूँ.''

''मैंड़म नाश्ता.''

''इच्छा नहीं है.''

''मैंने तैयार कर दिया है, थोड़ा सा ले लीजिए.''

''ले लो बेटी.''

गिरजा नाश्ते की प्लेट तथा बुआ की चाय ले आई. सुषमा ने एक पराठा ही लिया. बुआ ने चाय खत्म भी नहीं कर पाई थी कि सुषमा उठ खड़ी हुई.

''आज खाने में क्या लेंगी मैंडम?''

''बुआ बता देंगी.''

''जी अच्छा.'' सुषमा अस्पताल को चल दी. रास्ते में काफी भीड़-भाड़ दिख रही थी, जाने में काफी रुकावटें आईं. अस्पताल में भी मरीजों की काफी भीड़ थी. डॉक्टर को आते देख लोगों में अफ़रातफ़री मच गई. सुषमा सीधे वार्ड में गई तथा भरती मरीजों को देखने लगी. नर्स तथा वार्डबॉय उसके साथ-साथ चल रहे थे. नर्स ने कहा-''मैंडम एक इमरजेन्सी पेसेन्ट है?

''बर्न केस है. पहले उसे ही देख लीजिए.'' सुषमा आकस्मिक चिकित्सा इकाई की ओर चल दी. सुषमा के पैर ज़मीन पर नहीं पड़ रहे थे, वह सोच रही थी शायद फिर किसी धनाढ्य ने दहेज न मिलने के कारण एक और मासूम की बलि चढ़ा दी है.

सुशीला का क्षतविक्षिप्त चेहरा फिर एक बारगी उसकी नज़रों के सामने था और सामने थे दुष्ट गिरधारी, उसका बेटा, भ्रष्ट पुलिस थानेदार तथा एस. डी.एम गुप्ता के चेहरे जो उसे चिढ़ा रहे थे, क्या कर लिया डॉ.सुषमा तुमने हमारा? तुम न सुशीला को बचा सकीं और न ही भेज सकी हमें जेल के सीखचों में. वह एक क़दम आगे बढ़ाती थी कि दो क़दम अपने आप बढ़ जाते थे. आकस्मिक चिकित्सा कक्ष जैसे मीलों दूर हो, उसे पहुँचने की जल्दी थी और दूरी न जाने कितनी लम्बी.

''मेरी पत्नि को बचा लीजिए डॉ.मैंड़म बचा लीजिए उसे.'' इमरजेन्सी वार्ड के दरवाज़े पर पहुँचते ही डॉ.सुषमा से गिड़गिड़ाते हुए सीमा के पति सुरेश ने कहा.

सुरेश की बातों में पीड़ा थी, उसकी आवाज़ में करुणा थी, जिसमें झलक रहा था, पति-पत्नि के बीच का रिश्ता. डॉ.सुषमा जैसे ही वार्ड में पहुँची सीमा की हालत देखकर स्तब्ध रह गई. बुरी तरह से झुलसा चेहरा फोलों में परिवर्तित ज़िश्म देखकर वह घबरा गई. इसके पहले डॉ.सुषमा ने ऐसा दृश्य कभी नहीं देखा था.

सीमा बेहोश थी किन्तु उसकी सांसे चल रहीं थीं. शायद वह अंतिम सांसे गिन रही हो. सुषमा ने तत्काल उपचार प्रारम्भ किया तथा जिला चिकित्सालय से बर्न विशेषज्ञ को काल भेजा. नर्स ने केस सीट डॉ.सुषमा के सामने लाकर रखी. तभी टेलीफोन की घन्टी बज उठी.

'यस डॉ.सुषमा बोल रही हूँ, कहिए क्या कहना चाह रहे हैं आप?''

''मैं थाना प्रभारी शर्मा बोल रहा हूँ।''

''आप अस्पताल आ जाइए, पूरी जानकारी ले लीजिए.''

थानेदार शर्मा तत्काल अस्पताल के लिए चल दिया. उसने दो चार सिपाही एवं हवलदार भी अपनी जीप में चढ़ा लिए थे, जैसे वह डकैतों का इनकाउण्टर करने जा रहा हो. थाने के सामने जीप रुकी और पुलिस वाले बड़ी तत्परता से जीप से कूद पड़े. सबसे पहले वे सुरेश पर झपटे और उसे धर दबोचा. अस्पताल में अफरातफरी मच गई। लोग सकते में थे कि इधर सुरेश की पत्नी मौत से जूझ रही है, उसके छोटे-छोटे बच्चे चीख चिल्ला रहे हैं और उधर पुलिस वाले उसे अपनी गिरफ़्त में लेकर उसके साथ अमानवीय बर्ताव कर रहे हैं. वार्डबॉय ने अन्दर जाकर डॉ.सुषमा को अस्पताल परिसर में चल रही पुलिस कार्यवाही की जानकारी दी. डॉ० सुषमा तुरन्त बाहर आ गई. उन्होंने देखा वही थानेदार आज कानून का सच्चा रक्षक बना हुआ सुरेश पर रौब झाड़ रहा है जो कल गिरधारी के सामने पूंछहिला रहा था. जिसने डॉक्टर के आदेश की अवहेलना कर सुशीला को गिरधारी को सौंपने में महत्वपूर्ण किरदार निभाया था.

''क्यों क्या बात है ये क्या कर रहे हैं आप?'' डॉ.सुषमा ने थाना प्रभारी शर्मा से प्रश्न किया.

''मैंडम दहेज प्रताड़ना का प्रकरण है मुल्ज़िम फरार हो सकता है.''

"उसकी पत्नि सीरियस है."
"तभी तो, उसे हिरासत में लिया है."
"आपने किसकी अनुमति से उसे हिरासत में लिया है?"
"पुलिस अपना काम कर रही है इसमें अनुमति?"
"आप ने अस्पताल परिसर में अनधिकृत चेष्टा की है."
"मैंड़म आप पुलिस कार्यवाही में हस्तक्षेप कर रही हैं."
"आप मरीज़ के इलाज में व्यवधान डाल रहे हैं. उसकी पत्नि के इलाज़ में उसका सहयोग जरूरी है, उसके बच्चे बिलख रहे हैं. आपका यह कृत्य अमानवीय है."
"मैंड़म मेरी पत्नि को बचा लीजिए. इनसे तो मैं निपट लूँगा. आप मेरी चिन्ता न करें."
"आप अस्पताल परिसर में किसी से ज़्यादती नहीं कर सकते हैं. सुरेश उठो, ये परचा पकड़ो और दवाई लेकर आओ." डॉ. सुषमा ने कहा-
"थानेदार ने दाँत मींस लिए. सुरेश उठा उसने पुलिस की परवाह किए बगैर डॉ.सुषमा से परचा लिया और दवाइयाँ लेने के लिए चल दिया.

दवा की दुकान अस्पताल परिसर से ही सटी हुई थी. यह दुकान रेडक्रास सोसायटी की थी. यद्यपि सुरेष के पास उतने रुपये नहीं थे जितने रुपयों की दवाइयाँ डॉक्टर ने लिखीं थीं, किन्तु दुकान प्रभारी सुरेश को पहचानता था, उसने उसे दवाइयाँ दे दीं. सुरेश दवाइयाँ लेकर शीघ्र लौट आया. डॉ० सुषमा ने तत्काल समुचित इलाज प्रारम्भ कर दिया.

"जाको राखें साइयाँ मार सके न कोय, बाल ना बांका कर सके जो जग बैरी होय." डॉ० सुषमा जो कर्तव्यनिष्ठा की जीती जागती मिसाल बनकर उभरी है, ने सीमा के इलाज में अपने आप को झोंक दिया. तीन दिन तीन रात की लम्बी बेहोशी के बाद सीमा का होश लौटा और उसने सबसे पहले सुरेश को ही पुकारा. सुरेश प्रसन्नता से उछल उठा उसने डॉ० सुषमा के पैर पकड़ लिए कृतज्ञता में उसकी आँखों से अश्रुकण झर पड़े. सीमा के बच्चे उसके पास खड़े थे, जो अपनी माँ की हालत पर रो-रोकर बेहाल हो चुके थे, प्रसन्न हो उठे. खुशी का वातावरण निर्मित होने लगा था.

सीमा के माँ-बाप भाई-बहन, भाभियाँ सभी आ चुके थे. पुलिस वालों ने उन सभी के बयान लेने के लिए अनेक प्रयास किए किन्तु किसी ने भी सुरेश तथा उसके माँ-बाप के विरोध में मुँह नहीं खोला. उन सबके मन में केवल सीमा के स्वास्थ्य की चिन्ता थी.

पुलिस किसी न किसी बहाने सुरेश को दहेज प्रताड़ना एक्ट के अन्तर्गत उलझाना चाहती थी किन्तु सीमा-सुरेश का प्रेम और सौहार्द इस विषम समय की परीक्षा में सच्चा साबित हुआ. सीमा के बच्चों से भी पुलिस लगातार पूछ-ताछ करने का प्रयास करती रही कि कुछ न कुछ ऐसी जानकारी मिल जाय जिसकी परणति को सीमा का जलना आत्महत्या के प्रयास में बदला जा सके. अब सीमा की हालत बहुत कुछ अच्छी हो चुकी थी. थाना प्रभारी लगातार प्रयास में था कि सीमा के बयान दर्ज करा सके किन्तु डॉ.सुषमा अपनी जिद पर अडिग थी. उसने पुलिस को अनुमति यह कहकर नहीं दी कि अभी मरीज़ की हालत ऐसी नहीं है कि उससे पूछताछ की जा सके.

"मैंडम सीमा को होश आए तीन दिन हो चुके हैं, आप हमें बयान लेने की अनुमति दे दें."
"आप सीमा के माँ-बाप तथा सुरेश के माँ-बाप की उपस्थिति में बयान दर्ज कर सकते हैं किन्तु ध्यान रखा जाय कि मरीज़ से क्रास क्वश्चन न किए जांय जिससे उसे मानसिक कष्ट पहुँचे और उसकी हालत बिगड़े."
डॉ.सुषमा ने पुलिस को कठोर निर्देश देते हुए कहा. थाना प्रभारी कुढ़ गया किन्तु डॉ.सुषमा के निर्णय को चुनौती देना उसकी परिधि से बाहर था.

"करता के मन और है, दाता के मन और।" थानेदार निर्दोष सुरेश पर अपराधिाक प्रकरण दायर कर उसे फंसाने का प्रयास करना चाह रहा है किन्तु-"मुद्दई लाख बुरा चाहे तो क्या होता है, वही होता है जो मंजूरे खुदा होता है।"

कुण्ठित इरादों को लिए थानेदार ने सीमा से पूछतांछ का सिलसिला जारी किया. यद्यपि सीमा की हालत अभी भी चिन्ताजनक थी. वह लगभग ५० प्रतिशत जल गई थी. हाथ-पैर, कमर, पेट-पीठ बुरी तरह जले थे किन्तु चेहरा साफ-साफ बच गया था. जब थानेदार पूछतांछ कर रहा था, उस समय सीमा का मनोबल जाग उठा और वह बड़ी हिम्मत के साथ थानेदार के प्रश्नों का उत्तर दे रही थी. इस अवसर पर सीमा की माँ मिथला देवी, पिता नारायण प्रसाद, सुरेश के पिता श्याम बिहारी, माँ राधारानी तथा सीमा के बच्चे वहाँ पर उपस्थित थे. डॉ. सुषमा ने नर्स को भी वहीं पर उपस्थित रहने के निर्देश दे रखे थे.

"आप कैसे जल गईं?" थानेदार ने सीमा से प्रश्न किया.
"मैं कार्यालय से लौटकर आई थी, सोचा चाय बनाकर पी लूँ. मैंने चाय बनाने के लिये गैस जलाई और केतली में पानी, शक्कर, चाय पत्ती डाली

तभी दरवाज़े पर दस्तक की आवाज़ आई. मैं दौड़कर दरवाज़े पर गई. मेरी छोटी बेटी स्कूल से लौटकर आई थी. मैं ने दरवाज़ा खोला और उसे लेकर अन्दर आई.'' सीमा चुप हो गई षायद घावों में दर्द बढ़ गया था।

''फिर?''

''गैस पर रखी चाय उफनने लगी थी. मैंने दौड़कर उसे उठाने का प्रयास किया जल्दी में केतली सीधी हाथ से पकड़ ली, जिससे हाथ जला तो केतली वहीं छोड़ दी चाय बिख़र गई. मैं उस समय घबरा गई थी. मेरी साड़ी के पल्लू में आग लग गई थी जो मैं नहीं देख पाई थी. साड़ी सिन्थेटिक थी, तुरन्त आग पकड़ गई और मेरे शरीर में लिपट गई. मैं चीखी तो मेरी बिटिया ने पड़ोस में आवाज़ लगाई. पड़ोसी बचाने दौड़ पड़े और मेरे ऊपर पानी डालने लगे.''

''उसके बाद?''

''उसके बाद मैं अस्पताल में थी।''

''आपको अस्पताल में कौन लाया?''

''मुझे मालूम नहीं, मैं बेहोश हो चुकी थी.'' सीमा ने कहा और आँखें बन्द कर लीं.

''इसके आगे मैं बतला रही हूँ अंकल.

''हाँ, बोलिये.'' थानेदार ने कड़ी आवाज़ में कहा.

''बच्ची से इस तरह बोलने का तरीका ठीक नहीं है दरोगा जी आपका.'' सीमा की माँ ने कहा.

''मैंने कोई गाली दे दी है क्या?''

''गाली क्यों दोगे, अगर हिम्मत करोगे तो उसका मज़ा भी चख लोगे समझे'' सीमा के पिता जी ने दरोगा को हड़काते हुए कहा.

''आप लोग कानूनी कार्यवाही नहीं करने दे रहे हैं.'' थानेदार ने बड़े आवेश में कहा.

''हाँ, अंकल लिखिये, जब मम्मी को आग लग गई थी तो मैंने पड़ोसी सिन्हा आन्टी को आवाज़ दी. सिन्हा आन्टी-अंकल तथा शर्मा अंकल जी आ गये उन्होंने मम्मी के ऊपर पानी की बाल्टी उड़ेल दी. सिन्हा आन्टी ने मम्मी के जले कपड़े बदले. सिन्हा अंकल ने मेरे पापा को फोन किया. मेरे पापा जी जब तक आते सिन्हा अंकल तथा शर्मा अंकल ने आटो बुलाकर मम्मी को उसमें लिटाया और अस्पताल ले जाने लगे तब तक पापा जी आ गये. सभी लोग मम्मी को अस्पताल ले आए.'' सीमा की लड़की में घटना का पूरा विवरण थानेदार को लिखाया.

''लोग कहते हैं सीमाजी, कि आप तथा आपके पति में झगड़ा होता रहता था, आपने अपने पति से तंग आकर आत्महत्या का प्रयास किया है?''

''क्या बकवास कर रहे हैं आप। मेरे बहू बेटे, बड़े प्यार से रहते हैं. उनमें कभी भी झगड़ा नहीं हुआ.''

सुरेश की माँ ने थानेदार का जोरदार शब्दों में विरोध करते हुए कहा. सीमा कुछ भी नहीं बोली. वह चुप थी, उसकी आँखे सज़ल हो उठी थीं.

''मैं आपका जबाब चाहता हूँ मि.सीमा.

''नहीं साहब, मेरे पति भले इंसान हैं, इन्होंने मुझे कभी एक भी शब्द ऐसा नहीं कहा जिससे मुझे कष्ट पहुँचा हो. मेरे पति जैसा नेक इंसान हर पत्नी को मिले. मैं तो भगवान से यही प्रार्थना करूँगी कि मुझे हर जन्म में इन्हीं की अर्द्धांगिनी बनने का अवसर दें.'' सीमा बोलते-बोलते चुप हो गई. शायद वह बेहोश हो गई थी. नर्स ने सीमा की हालत बिगड़ती देखी तो वह डॉ.सुषमा के पास दौड़कर गई.

''मैंड़म सीमा बेहोश हो गई है.'' डॉ. सुषमा तत्काल सीमा के पास आ गईं. सभी लोगों को वहाँ से हटाते हुए सीमा को देखा. नर्स से तत्काल इंजेक्शन देने को कहा. सुरेश को वहाँ बुला लिया गया. सभी घबरा गए. नर्स ने सीमा को इंजेक्शन लगाया. डॉ.सुषमा ने सुरेश से कहा आप यहीं रहें. थोड़ी देर में इन्हें होश आ जायेगा. आप चिन्ता न करें किन्तु किसी को इनसे बात नहीं करने दें. सीमा को आराम की जरूरत है।'' डॉ. सुषमा ने थानेदार की ओर मुखातिब होते हुए कहा-''मैंने आप से कहा था न कि मरीज की हालत अच्छी नहीं है. अभी वह बयान देने की स्थिति में नहीं है. उसे परेशान न किया जाय किन्तु आपने उससे वही प्रश्न किए जिससे उसे मानसिक वेदना हुई और वह बेहोश हो गई. आपको स्थिति को समझने का प्रयास करना चाहिए.''

''मैं अपने कर्तव्य का पालन कर रहा हूँ.''

''पहले मरीज की हालत तो सुधरने दें, तब कहीं....''

''अगर वह मर गई तो...?''

''तुम बड़े बद्तमीज़ हो दरोगा.'' सीमा के पिता ने कहा. थानेदार तैश में आ गया, किन्तु डॉ.सुषमा ने उन्हें अस्पताल परिसर में ऊँची आवाज़ में वार्तालाप करने के लिए रोक रखा था. अतः वह चुप रह गया. डॉ. सुषमा ने सीमा को लगातार तीन इंजेक्शन लगवाये फिर भी वह होश में नहीं लौटी. दोपहर के तीन बज रहे थे तब सीमा ने आँख खोली और सबसे पहले सुरेश को याद किया.

''हाँ! सीमा, मैं तुम्हारे पास हूँ . तुम्हें कुछ भी नहीं होगा. तुम चिन्ता मत करो तुम ठीक हो जायेगी.''

''ये लोग क्या कह रहे हैं?''

''कुछ भी नहीं, किसी की बात मत सुनो मैं तो कुछ नहीं कहता.'' सुरेश ने सीमा का सिर हाथ से सहलाते हुए कहा. सीमा ने आँखे बन्द कर ली।

वैवाहिक जीवन का आधार विश्वास है. पति-पत्नी एक दूसरे से विश्वास की ड़ोर से बन्धे रहते हैं. वे एक दूसरे को अपने प्राणों से भी अधिक प्यार करते हैं, समर्पित रहते हैं एक-दूजे के लिए. इसी विश्वास एवं प्यार की शाश्वत ड़ोर के सहारे जीवन गुजार लेते हैं.

लोगों की मान्यता है कि प्यार का रिश्ता अटूट होता है. लोग यह भी कहते हैं कि प्रेमियों के जोड़े जन्म-जन्मांतर का साथ निभाते हैं. कहते हैं कि पति-पत्नि का साथ प्रारब्ध का फल होता है, जो सच्चा प्रेम करते हैं उन्हें कई जन्मों तक एक दूसरे का साथ मिलता है और यही कामना करते हैं वे. सीमा ने इस तरह के भाव व्यक्त किए वहाँ पर उपस्थित लोगों के बीच.

हंस के बारे में कहावत है कि वे हमेशा जोड़े में रहते हैं. वे सदैव साथ-साथ विचरण करते हैं. एकके बिना दूसरा एक पल भी जीवित नहीं रहना चाहता है. वे एक दूसरे से क़दम मिलाकर चलते हैं. यही उनके जीवन की सार्थकता होती है. लोग कहते हैं कि अगर उनमें से एक की मृत्यु किसी कारण से हो जाती है तो दूसरा स्वतः अपने प्राणों का परित्याग कर देता है.

सीमा-सुरेश का प्यार भी हंसों की जोड़ी जैसा ही है जिसे कुण्ठाग्रस्त थानेदार बदनाम करने का कुत्सित प्रयास करना चाह रहा था. वह पूर्ण रूप से तय करके आया था, कि सीमा के साथ घटी दुर्घटना को वह आत्महत्या का प्रयास साबित कर सुरेश तथा उसके माता-पिता को जेल की सलाखों के अन्दर कर देगा. अपने कुचक्र को फलीभूत न होते देख थानेदार आक्रोशित हो रहा था. उसके आक्रोश का केन्द्र बिन्दु है डॉ.सुषमा जो उसके प्रयास को सफलता में परिवर्तित करने में अड़ंगा बनी हुई है.

सुरेश हर पल सीमा के पास था, उसकी तीमारदारी में समर्पित. डॉ. सुषमा की निष्ठा तथा सुरेश के प्रयत्न सफलता के परवान चढ़े. कुछ ही दिनों में सीमा ठीक होने लगी. लगभग दो माह लगे, सीमा पूर्ण स्वस्थ्य हो गई.

''आप अब पूर्ण स्वस्थ्य हैं, आज आपकी छुट्टी कर दूँ ?''_डॉ. सुषमा ने सीमा से पूछा.

''मैं क्या कहूँ मैंडम, आपने मुझे नया जीवन दिया है. मैं आपका एहसान कभी नहीं भूलूंगी.''

''एहसान कैसा, ये तो मेरा कर्तव्य था, जो मैंने पूर्ण किया. भगवान आपको स्वस्थ्य रखे.''

''आज के इस भीषण संक्रमण काल में कर्तव्य के प्रति कौन सचेत है मैंडम. आज तो लोग अधिकारों के संचय के लिए प्रयासरत रहते हैं. अधिकारों की आड़ में भौतिक संशाधनों के संग्रहण में जुटे हैं. कर्तव्यों की ओर कौन सोचता है. अधिकार और कर्तव्य के बीच छिड़े इस द्वन्द्व में कर्तव्य तो किसी कौने में दुबका हुआ आहें भर रहा है और मौकापरस्त अधिकार उसके ऊपर कोड़े बरसा रहा है. आप जैसे बहुत कम लोग बचे हैं जो कर्तव्य के प्रति समर्पित हैं.''

'' नहीं सुरेष भाई, अभी भी लोगों का कर्तव्य के प्रति रुझान है और लगे भी है कर्म की उपासना में.''

''आप बुरा न माने मैंड़म आज कल तो थानेदार षर्मा जैसे लोग अधिक मिल रहे हैं।

''आप ठीक कह रही हैं, किन्तु अच्छे लोगों की कमी आज भी नहीं है। इन्हीं की वजह से ही सामाजिक साम्य स्थापित है।'' डॉ० सुशमा ने कहा.

पूरे दो माह बाद सीमा अपने घर वापिस जा रही है। उसके माता-पिता सास-ससुर, बच्चे तथा पति सभी बड़े प्रसन्न हैं। सीमा भी नई ज़िन्दगी पाकर खुष थी। डॉ.सुशमा को कष्तज्ञता ज्ञापित करने के लिए उन्हें षब्दों की कमी महसूस हो रही थी. समान गाड़ी पर रखा जा चुका था, सीमा ने गाड़ी में पैर रखने के पूर्व अस्पताल की देहरी पर माथा टेका, सास-ससुर के चरण स्पर्ष किए। पुरस्कार स्वरूप नर्स तथा वार्डबॉय को कुछ रुपये देने के लिए सुरेष की ओर संकेत किया। सुरेष ने तुरन्त ज़ेब में हाथ डाला, पर्स निकाला तथा सौ-सौ रुपये का एक-एक नोट नर्स तथा वार्डबॉय को देने के लिए बढ़ाया उन दोनों ने कहा-''नहीं बाबूजी रहने दीजिए।''

''यह हमारी ओर से पुरस्कार है, इसे ले लो. आप लोगों ने सीमा की बहुत सेवा की है उसके बदले में तो ये कुछ भी नहीं है.'' सीमा के ससुर ने कहा।

''ये तो हमारा कर्तव्य है साहब.''

''आप को लेना ही होगा.'' सुरेष की माँ ने आग्रह पूर्व कहा।

''ले, लो, ले, लो, खुष होकर दे रहे है। '' डॉ. सुशमा ने कहा।

सीमा तथा उसका परिवार गाड़ी में बैठकर चलने को हुआ। सुरेष ने डॉ. सुशमा का बार-बार अभिवादन करते हुए धन्यवाद दिया। गाड़ी धीरे-धीरे अस्पताल परिसर से बाहर की ओर चल दी। डॉ. सुशमा, नर्स एवं वार्डबॉय उनकी ओर देख रहे थे। एक मासूम की ज़िन्दगी बचाने की प्रसन्नता उनके चेहरे से झलक रही थी.

जनसंदेश

यदि केन्द्रीय सरकार/सरकारी बैंक/केन्द्रीय सरकार के उपक्रम का कोई भी अधिकारी घूस माँगे तो फोन करें:-एस.पी. सीबीआई, लखनऊ-0522-2201459, 2622985 और एस.एम.एस 9415012635

हंसना मना है

० चोर की मरम्मत करके उसे बेहोश कर देने पर पुलिस इंसपेक्टर ने एक महिला की तारीफ की तो वह बोली-इसमें प्रशंसा की क्या बात है. वास्तव में चोर के आने पर मैं समझी थी कि रात गए टोनी के पापा क्लब से लौटे हैं.

० बस में बहुत भीड़ थी. एक यात्री ने भीतर घुसते हुए कहा-ओह! लगता है बस में जानवर भरे हैं. पास ही बैठे एक सज्जन तपाक से बोले-हां साहब सभी तरह के जानवर यहॉ बैठे है बस एक गधे की कमी थी.

० एक स्थान पर कुछ अमेरिकन अपने भारतीय मित्रों के साथ बैठे थे. डाकुओं का जिक्र हो रहा था कि किस प्रकार वे सेठों के रिश्तेदारों को उठाकर ले जाते हैं और उन्हें पैसा नहीं दिया गया तो उन्हें नहीं लौटाते.

अमेरिकनों ने बताया कि उनके देश में दूसरी परम्परा है जहां डाकू लखपतियों की सासों को पकड़कर ले जाते हैं और दूसरे दिन यह संदेश भेजा जाता है कि तुरन्त दस हजार डालर अमुक स्थान पर भेज दो नहीं तो अभी तुम्हारी सांस को वापस भेज दिया जाएगा.

गुजारिश

1. 'विश्व स्नेह समाज' आपकी अपनी पत्रिका है. इसे अकेले न पढ़ें, बल्कि दूसरों को भी इससे परिचित कराएँ. आप अपनी मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाएँ ही भेजें. एक बार में अधिकतम दो ही रचनाएँ भेजें. उनके प्रकाशनोपरान्त ही दूसरी रचना भेजें. रचनाएँ पर्याप्त हासिया छोड़कर कागज के एक तरफ स्पष्ट सुपाठ्य अक्षरों में लिखी हुईं या टंकित होनी चाहिए. रचनाओं पर मौलिकता व उनके अप्रकाशित होने का उल्लेख अवश्य करें. बिना उचित टिकट लगे जवाबी लिफाफे के अस्वीकृत रचना लौटाई नहीं जाती.
3. रचना प्रेषण के कम से कम तीन माह तक अन्यत्र प्रकाशित होने के लिए रचना न भेजें और न ही कहीं प्रकाशित रचना भेजें. वैसे तो पत्रिका सभी बुक स्टालों पर उपलब्ध कराई जा रही है. फिर भी मिलने में असुविधा हो तो सदस्यता ग्रहण कर लें, पत्रिका डाक द्वारा भेज दी जाएगी.
4. सदस्यता शुल्क पत्रिका के खाते में सीधे जमा कर/धनादेश/बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'विश्व स्नेह समाज' के नाम भेजें. शुल्क के साथ-साथ एक पोस्टकार्ड भी भेजें, जिस पर अपना नाम व पता साफ-साफ लिखें.
5.जो रचनाएँ आपको अच्छी लगें उस बाबत रचनाकार को खत लिखकर अवश्य प्रोत्साहित करें.
6. 'विश्व स्नेह समाज' के परिशिष्ट अथवा प्रायोजित विशेषांक योजना में शामिल होने के लिए 09935959412 या 09335155949 पर सम्पर्क करें.
7. विश्व स्नेह समाज मात्र एक पत्रिका नहीं है बल्कि समाज में एक रचनात्मक क्रांति लाने की माध्यम है. इसे हर सम्भव सहयोग प्रदान करें.❑संपादक

क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण

१. प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर
२. बिक्री की व्यवस्था
३. प्रचार—प्रसार की व्यवस्था
४. विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें

प्रसार सचिव
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी—93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद—211011
bs&esy% sahityaseva@rediffmail.com

मृत्यू के बाद

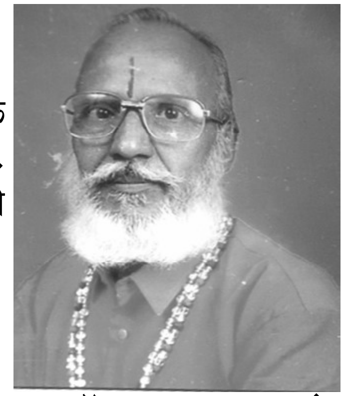

'इस आत्मा ने मनुष्य योनि में बहुत पाप, परस्त्री व्यभिचार व अनेक निर्दोष प्राणियों की हत्या की है. पुण्य कर्म तो इसके खाते में है हीं नहीं.
न्यायाधीशः इसे अग्नि कुण्ड में ले जाकर उलटा लटका दो, इसके खोपड़ी में खूंटा ठोंक दो, नीचे से दमघोटूं गूंगल की धूनी दो.
आत्माः प्रभु इतना कठोर दण्ड?
जल्लादः यह सब तो तूझे तभी सोचना चाहिए था.

✍डॉ०अरुण कुमार आनंद
चन्दौसी, भीमनगर, उ.प्र.

भाग-०२

यमराज के यमदूत मनुष्य की आत्मा को जबरन कोड़े लगाकर निकाल कर ले जाने का प्रयास करते हैं. लेकिन वह यमदूतों से संघर्ष करता है, परलोक की यात्रा पर जाने के लिए तैयार नहीं है. अन्ततः उसे हार मान कर जाना ही पड़ता है. यमराज के जल्लाद उसे ऊपर से लेकर पैरों तक मोटे-मोटे जंजीरों से लपेट कर कांटेदार झाड़ियों के रास्ते मारते-पीटते घसीटते हुए ले जा रहे हैं. इस वक्त उसके साथ परिवार का कोई सगा संबंधी नहीं है, भौतिक संसार का कोई मित्र बंधु भी नहीं है. जिसे वह कुकृत्य कर अर्जित धन से मदीरा मांस खिलाया करता था. मृतात्मा को जंजीरों से बांधकर घसीटते हुए यमलोक के न्यायाधीश के सामने कटघरे में खड़ा कर दिया जाता है. न्यायाधीश का पेशकार न्यायाधीश से कहता है-'इस आत्मा ने मनुष्य योनि में रहते हुए बहुत पाप, पर स्त्री व्यभिचार व अनेक निर्दोष प्राणियों की हत्या की है. पुण्य कर्म का तो एक भी शब्द इसके खाते में नही हैं.

न्यायाधीशः इसे अग्नि कुण्ड में ले जाकर उलटा लटका दो, इसके खोपड़ी में खूंटा ठोंक दो, नीचे से दमघोटूं गूंगल की धूनी दो, रोज १००१ कोड़े लगाओ.

आत्माः प्रभु इतना कठोर दण्ड?

जल्लादः यह सब तो तूझे तभी सोचना चाहिए था जब निर्दोष मनुष्य, पशु पक्षियों की हत्या इत्यादि पाप कर रहा था. महापापी अब तेरे परिवार के संगे संबंधी तूझे बचाने क्यों नहीं आ रहे हैं? जिनके लिए वह कूकर्म करता था.

आत्माः मैंने सुना है, अगर किसी का चुटकी भर पुण्य भी होता है तो दण्ड क्षमा हो जाता है, क्या मैंने ऐसा कोई सदकर्म नहीं किया मनुष्य जीवन में?

न्यायाधीशः हां, मनुष्य आत्मा तुने एक छोटा सा पुण्य जरुर किया है, उससे तेरे जिन्दगी भर के कूकृत्यों को माफ तो नहीं किया जा सकता है. उस छोटे से पुण्य कर्म का परिणाम तुझे तेरे अगले मनुष्य जन्म में ही मिलेगा. यहां तो अभी तूझे अन्य जघन्य अपराधों की सजा दी जाएगी.

यमराज के आदेश से उस मनुष्य के मृत आत्मा को चाबुक से पीटते हुए खूनी दलदल मार्ग से ले जा रहे हैं. खूनी दलदल में उसका सुक्ष्म शरीर खून से लथपथ है. सुर्ख लाल अग्नि में तपे हुए सलाखों से उसे दागा जा रहा है. प्रहार पड़ते ही वह चीख उठता था. इस आत्मा की दशा देख अन्य मृतात्माएं कांप उठी हैं, उक्त आत्मा एक असलम नाम के मनुष्य की है, जो जिन्दगी भर कसाई का काम करता था और एय्यासी करता था. कभी ईश्वर को याद नहीं किया. कहता है मुसलमान धर्म में कर्म कुछ भी करो रोजे रमजान करने वालों के सभी गुनाह माफ हो जाते है. लेकिन यमराज के दरबार में ना तो कोई धर्म है न मजहब न जाति-पाति. परलोक में सब इंसानी आत्माए हैं. कर्म का फल तो हर किसी मृतात्मा को भोगना पड़ता है. ब्रम्हाण्ड में न तो कोई कुरान, बाईबिल, गीता न रामायण है. यह सब मनुष्य लोक में मनुष्यों द्वारा रची गई रचनाएं है. परलोक में आने के बाद प्रत्येक मानवात्मा को उसके मनुष्य जिन्दगी में किये गये अच्छे बूरे कर्मो का परिणाम उसे दिया जाता है.

यमलोक के अधिकारीगण ऋषि मुनियों के वेष में बैठे अपने-अपने बही खाते देख रहे है. यहां आने वाले मानव मृतात्माओं का पूरा जीवन वर्णन यहां पर दाखिल खारीज होता है. मृत्युलोक के दो द्वार है. प्रवेश द्वार दक्षिण दिशा में और निकास द्वार उत्तर दिशा में है. द्वार पर यमलोक के द्वारपाल नियुक्त है. इन अधिकारियों के सामने मृत्युलोक से लाये गये मानव आत्माओं

की लम्बी लाईन लगी है. सभी आत्माएं अपनी बारी आने की प्रतीक्षा में खड़े है. पृथ्वी लोक में जिन मृतात्माओं का क्रिया कर्म संस्कार उनके संबंधियों, पारिवारिक सम्बंधियों द्वारा नहीं किया गया है. उन्हं मृत्युलो के अंधेरे प्रागंण में एकत्रित किया गया है. तेरह दिन का क्रिया कर्म सम्पन्न होने के बाद उन्हें अंधेरी कोठरी से निकाल कर अधिकारियों के सामने हाजिर किया जाएगा. यहीं पर एक प्रागंण ऐसा भी है जहां हर वर्ष मृतात्माओं को बुलाया जाता है. उसमें उनके पारिवारिक सदस्यों द्वारा किये गये पुण्य कर्मो का फल पितृपक्ष श्राद्ध का लाभ दर्पण दान-पुण्य उन्हें बांट दिया जाता है. इसमे १६ दिन तक उन मृतात्माओं को भी लाया जाता है. जिनका कोई वारिस न होने के कारण क्रिया कर्म नहीं हो पाता है. यदि किसी पुण्य व्यक्ति द्वारा श्राद्ध कर्म या पिण्ड दान कर दिया जाता है तो वे तृप्त हो जाते है. आशीर्वाद देकर लोक में १६वें दिन चले जाते है. जिन मृतात्मा को दर्पण-दान पिण्ड दान प्राप्त नहीं होता वे पुनः उसी अंधेरे प्रागंण में धकेल दिये जाते है. इन आत्माओं को स्वर्ग-नर्क लोक कहीं स्थान नहीं मिलता. न ही आत्मायोनि से मुक्ति मिलती है. ब्रम्हाण्ड के मृत्युलोक के अंधेरे प्रांगण में भटकते रहते हैं. ऐसी मृतात्मा में जो अपने सदकर्मो द्वारा ब्रम्हाण्ड सागर पार करते हैं, उन्हें किसी क्रिया कर्म अन्तिम संस्कार की जरुरत नहीं होती. असंख्य मृत आत्माओं का विभाग दर विभाग आवागमन का सिलसिला जारी है. कोई फूल मालाओं से सजे उड़न खटोलों में सवार होकर देवदूतों के साथ देवलोक में जा रहे हैं. अप्सरायें नृत्य करते हुए उन पर सुगंधित द्रव्य और पुष्प वर्षा करती जा रही है. इन्होंने निश्चित ही मानव योनि में जीवन भर महापुण्य कर्म किया है. जो देवलोक को ले जाये जा रहे है. इन पुण्य आत्माओं को कहीं भी यातनाएं नहीं भोगनी पड़ती है. मृत्यु लोक और यमराज के दरबार में इन्हें हाजिरी तो लगवानी पड़ती है. कर्म बही खाते में इनके कर्मफल स्वर्ण अक्षरों में दर्ज होते है. मृत्युलोक की औपचारिकताएं पूर्ण करने के बाद आत्माओं को अन्य सक्षम लोक, तत्वक्षम लोक, देवलोक, नर्क लोक में भेज दिया जाता है, जहां पर वे आयु पूर्ण न होने तक कर्म दण्ड भोगते हैं.

क्रमशः

प्रस्तुत लेख एक लम्बी श्रृंखला लेख है. इसे क्रमशः प्रकाशित किया जाएगा. संभवतः इस श्रृंखला को पूरा होने में लगभग ३० अंक लगें. अपने विचारों से अवगत करावें

PSDIIT

(पवहारी शरण द्विवेदी इंस्टीट्यूट ऑफ इन्फारमेशन टेक्नोलॉजी)

एडमिशन एवं इन्फारमेशन सेंटर

नर्सरी टीचर्स ट्रेनिंग, कम्प्यूटर्स टीचर ट्रेनिंग, बी.सी.ए, पीजीडीसीए, एमसीए, बी.ए, एम.ए, मास्टर इन जनर्लिज्म एवं मास कम्युनिकेशन, डिप्लोमा इन कम्प्यूटर साईंस, डिप्लोमा इन टेक्सटाईल, एम.बी.ए, बीबीए, आईटीआई (इलेक्ट्रिकल, वायरमैन, ड्राफ्ट मैन आदि)

Visual Basic, JAVA, HTML, C, C++ programming, Projoect Work facility also available

प्रवेश 1 मार्च 2013 से प्रारम्भ

सम्बद्धताः ईआईआईएलएम यूनिवर्सिटी-सिक्किम, एम.बी. यूनिवर्सिटी-हिमाचल प्रदेश

समाज के हर वर्ग की शिक्षा को ध्यान में रखते हुए विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं सस्थाओं के कोर्सेस संचालित करवाये जाते है.

सम्पर्कः लक्सो कम्पनी के सामने, रामचन्द्र मिशन रोड, मुंडेरा, चुंगी, इलाहाबाद-२११०११ मो०: 9335155949

आपकी डाक

होली के अवसर पर

कीर्तिमय हो जीवन
शान्ति चहुँ ओर फैल जाए
मिलन पर्व होली
रंग ऐसा जमाए,
जलें दोष सबके
मिटे भ्रष्टाचार-दमन दामनियों का
होली की दमक में,
करें न किसी से घष्णा
इस पावन पर्व से,
मिलजुल कर बढ़ें हम आगे
उन्नति हो माँ भारती की,
जय-जयकार हो देशभक्ति की
समरसता की आरती भी,
मेरी यही कामनाएं
रंग पर्व पर अभिलाषाएं,
हार्दिक मंगलकामनाएं !!

शशांक मिश्र भारती, हिन्दी सदन बड़ागांव शाहजहांपुर-२४२४०१ उ.प्र.

संपादकीय गागर में सागर और सागर में अमृत देता हुआ है

संपादक, संपादन विधा में जितना सजग-सशक्त है उतना ही राष्ट्र चिन्तन में निष्ठावान प्रहरी सा चौकन्ना भी है. सम्पादकीय सणगता का पुष्ट प्रमाण है. यह अंक स्तरीय कहानियों, चुभते हास्य व्यंग्य, प्रेरक लघुकथाओं एवं चुटीली कविताओं का अनूठा रंग बिरंगे पुष्पों से सजा हुआ पूजा का थाल है. पत्रिका का अवलोकन एक सुखद अनुभव दे गया. प्रतिष्ठित रचनाकारों द्वारा प्रस्तुत पृथक-पृथक पुण्य पुंज जहां पत्रिका को ऊंचाईयों पर पहुंचने की होड कर रहे हैं वहीं आपका संपादन कौशल गागर में सागर और सागर में अमृत देता हुआ प्रतीत हो रहा है.
निरन्तर लेखन और उसके सुचारू रूप से कम कीमत में प्रकाशन का कार्य आपकी प्रमुख विशेषता बन गई है. सोने पर सुहागा की भांति से बड़ी श्रेष्ठता का उदाहरण यह है कि लोकरुचि और व्यापक जनहित में आप इस उपयोगी साहित्य का जिज्ञासु पाठकों को अल्प समय में जो आपको स्वार्थी प्रकाशकों की परिधि से बाहर रखकर एक सराहनीय कीर्तिमान प्रदान करता है. कृपा करके इस सामाजिक उत्थान के सराहनीय कार्य के लिए आप मेरी हार्दिक बधाई एवं अनेकानेक शुभकामनाएं सद्भावनापूर्वक सहर्ष स्वीकार करें. आपका आभार रहेगा.

प्रभाशंकर, बी-८०४, एन.जी.ओ कॉलोनी, वनस्थलीपुरम, रंगारेड्डी-७०, आ.प्र.

रंग विरंगी बधाई

मन भावन रंग लिए
मन में उमंग लिए
पिचकारियों में प्यार लिये
हाथों में अबीर ओर गुलाल लिये
हित मीत का प्रीत लिये
महुए की मादकता संग
सेमल पलाश की दहक लिए
नगाड़ों की थाप संग
फाग गीतों की मस्ती में
मस्ती का बहार लिए
सरसों की पीली अल्हड़ अंगड़ाई संग
बसंत संग फागुन का प्यार लिए
आई झुक के होली आई है।
बधाई आप सबको रंग-बिरंगी बधाईं
होली मुबारक हो।

राजेश कुमार मानस 'श्याम'
लक्ष्मी चौक, चिंगराजपारा, बिलासपुर, छ.ग. ४९५००१

प्रयास
काव्य संग्रह
रचनाकारः
ओम प्रकाश त्रिपाठी
मूल्यः 50/रुपये मात्र

नेता व्याजस्तुति और जागो भाग्य विधाता

रचनाकारः
बालाराम परमार 'हंसमुख'
मूल्यः 50/रुपये मात्र

प्रकाशकः
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद, उ.प्र. -२११०११ मो०६३३५१५५६४६

विश्व स्नेह समाज के 10 वार्षिक सदस्य बनायें और 250/-रुपये की पुस्तकें उपहार में पायें.

10 सदस्यों के नाम व पते सहित रुपये 1100/मात्र की राशि धनादेश/ड्राफ्ट द्वारा भेजने का कष्ट करें।

विश्व स्नेह समाज मासिक,
एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद- 211011, उ.प्र.

स्वास्थ्य

सदियों पुराने पारंपरिक नुस्खे से करें बड़ी बीमारियों का इलाज

-दाऊजी

भारत में सदियों से जड़ी-बूटियों से चिकित्सा की जाती रही है. आम रूप से उपलब्ध पेड़-पौधों के जड़ों, पत्तों से तमाम रोगोपचार किए जाते है.

अडूसाः लगभग ५ मिली पत्तियों का रस लेने से सर्दी खाँसी में आराम मिल जाता है साथ ही यही रस महिलाओं में मासिक धर्म को नियमित करने में भी मदद करता है।

सदाबहार या सदा सुहागनः दो फूलों को एक कप गर्म पानी में १० मिनट के लिए डुबा लिया जाए और फिर ठंडा होने पर पी लिया जाए, यह मधुमेह में फायदा करता है।

काली तुलसीः५-१० पत्तियों को कुचल लिया जाए और रस निकाला जाए और कान में डाला जाए तो यह कान दर्द में आराम दिलाता है।

तुलसीःतुलसी के बीजों को दिन में २-३ बार चबाने से अपचन और एसिडिटी में फायदा होता है।

अकरकराःफूलों की कलियों को दाँतो और मसूडों पर रखकर चबाया जाए तो दर्द में अतिशीघ्र आराम मिलता है।

पानःकच्ची पत्ती को चबाने से हृदय के वाल्व में जमाव या ब्लोकेज में फायदा होता है।

अजवायनःअजवायन के बीजों को काले नमक के साथ चबाने से अपचन में फायदा होता है।

पुदिनाः पुदिना की पत्तियों को चुटकी भर कपूर और सरसों तेल में मिलाकर पीठ दर्द में लगाया जाए तो आराम मिलता है।

गौती चाय, निंबु घास, हरी चाय, लेमन ग्रास पानी में पत्तियों को उबाला जाए और दिन में दो बार लिया जाए, इससे अस्थमा और ब्रोंकायटिस में लाभ होता है।

हडजोडःपूरे पौधे को कुचल लिया जाए और टूटी हुई हड्डियों वाले हिस्सों पर लगाया जाए, माना जाता है कि यह टूटी हड्डियों को व्यवस्थित कर देता है।

एलोवेराः पत्तियों से प्राप्त जैल को दिन में दो बार लेने से उच्च्व रक्तचाप में फायदा होता है।

शतावर, शतावरीः जडों का चूर्ण (४ ग्राम) एक गिलास गुनगुने दूध के साथ प्रतिदिन लेने से षरीर को ऊर्जा मिलती है।

जासवंत, गुडहलः लाल फूलों को कुचलकर बालों पर लगाया जाए, यह कंडीषनर की तरह काम करता है और बालों का पकना भी रोकता है।

पीपलःपेड की छाल को पानी में उबाला गंजापन दूर करता है और नए बालों के उगने में भी मदद करता है।

अश्वगंधाःजडों का चूर्ण मिश्री के साथ दिन में दो बार लेने से षरीर में ताकत और ऊर्जा का संचार होता है।

अंतमूलः इसकी जडों को चाय में उबालकर पीने से अस्थमा में गुणकारी होता है।

लटजीरा, लटकन, लटकनाः बीजों को मिट्टी के बर्तन में भून लिया जाए और चबाया जाए, यह भूख मिटाता है और वजन कम करने में मदद भी करता है।

छुईमुईः इसकी जडें टोनिक की तरह काम करती है। जडों की ५० ग्राम मात्रा को पानी के साथ पीसकर रस तैयार करें और दिन में दो बार इसका सेवन करें, ताकत प्रदान करती है।

गेंदाःदाद-खाज और खुजली वाले हिस्सों पर पत्तियों को रगड लिया जाए, जल्द ही आराम मिल जाता है।

पत्थरफोड, पत्थरचट्टाः पत्तियों को कुचलकर रस तैयार कर लिया जाए, रोज एक गिलास रस पंद्रह दिनों तक लगातार लेने से पथरी निकल जाती है।

पत्रकारों की सुरक्षा, संरक्षा एवं अधिकारों के लिए गठित

मीडिया फोरम ऑफ इंडिया

10 रीवां बिल्डिग, लीडर रोड, (रेलवे जंक्शन के सामने) इलाहाबाद–211003, उ.प्र.
09935959412, 9335155949 **Email:** media_fi@rediffmail.com, **Website**: www.mediaforumofindia.com

मीडिया फोरम का उपरोक्त पता ही एक मात्र कार्यालय है.
सभी पदाधिकारियों के नाम, पते फोटो सहित तथा सदस्यों के नाम वेब साइट में दर्ज है. इसके अतिरिक्त न तो कोई सदस्य ओर न पदाधिकारी विधिमान्य होंगे और न ही इनका फोरम से कोई वास्ता होगा.

साहित्य समाचार

गोकुलेश्वर द्विवेदी को 'सम्पादक शिरोमणि' की उपाधि

इलाहाबाद. देश की ख्यातिलब्ध साहित्यसेवी संस्था 'साहित्य मण्डल श्रीनाथद्वारा' के द्वारा आयोजित 'पाटोत्सव ब्रजभाषा समारोह' के अवसर पर महानगर के वरिष्ठ पत्रकार गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी, सम्पादक 'विश्व स्नेह समाज' (हिन्दी), राष्ट्रीय अध्यक्ष मीडिया फोरम ऑफ इंण्डिया एवं सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान को उनके उत्कृष्ट संपादन हेतु 'सम्पादक शिरोमणि' की उपाधि से संस्था अध्यक्ष श्री भगवतीप्रसाद देवपुरा ने उत्तरीय, शाल, श्रीफल एवं भगवान श्रीनाथ जी की प्रतिमा प्रदान कर सम्मानित किया है.

विदित हो कि श्री द्विवेदी को उनके उत्कृष्ट सम्पादन के लिए अब तक देश की प्रतिष्ठित साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थायें/ संस्थान विभिन्न मानद उपाधियों से सम्मानित कर चुकी है. मीडिया फोरम ऑफ इंण्डिया के महासचिव महेन्द्र कुमार अग्रवाल, राजकिशोर भारती, विजय लक्ष्मी विभा, डॉ. सोशन एलिजाबेथ, डॉ० रेवा नन्दन द्विवेदी, एम.कलाम राईन, श्रीमती जया आदि साहित्यकारों एवं पत्रकारों ने उन्हें बधाई दी है.

तुलसी-सम्मान २०१३ हेतु प्रविष्ठियाँ आमंत्रित

मध्यप्रदेश तुलसी साहित्य अकादमी, तुलसी सम्मान-२०१३ हेतु प्रविष्ठियाँ आमंत्रित करती है। इसके लिए हिन्दी साहित्य की प्रमुख विधाओं पर जनवरी २००७ से ३१ मई २०१३ के मध्य प्रकाशित कृतियों पर प्रदान किया जाएगा. सम्मान निम्न हैः-तुलसी शिखर सम्मान-समग्र लेखन के लिए एक साहित्यकार को, तुलसी साहित्यरत्न सम्मान-समग्र लेखन के लिए एक साहित्यकार को, तुलसी गीत सम्मान-उत्कृष्ट गीत सृजन हेतु, तुलसी ग़ज़ल सम्मान-उत्कृष्ट ग़ज़ल सृजन हेतु, तुलसी नवगीत सम्मान-उत्कृष्ट नवगीत सृजन हेतु, तुलसी कहानी सम्मान- उत्कृष्ट कहानी सृजन हेतु, तुलसी लघुकथा सम्मान-उत्कृष्ट लघुकथा सृजन हेतु, तुलसी कविता सम्मान-उत्कृष्ट कविता सृजन हेतु, तुलसी बालसाहित्य सम्मान-उत्कृष्ट बाल साहित्य सृजन हेतु, तुलसी उपन्यास सम्मान-उत्कृष्ट उपन्यास सृजन हेतु, तुलसी नाटक सम्मान-उत्कृष्ट नाटक सृजन हेतु, तुलसी साहित्यिक समीक्षा सम्मान-समीक्षा एवं आलोचना के लिए.

विशेषः सभी सम्मान चयन समिति की अनुसंशा के आधार पर १६ नवम्बर २०१३ के द्वितीय शनिवार को भोपाल में आयोजित समारोह में प्रदान किये जायेंगे। चयनित साहित्यकारों की सम्मान समारोह में उपस्थिति अनिवार्य होगी। समारोह में आने-जाने का द्वितीय श्रेणी रेल का आरक्षण सहित किराया देय होगा। ठहरने एवं भोजन आदि पर आने वाला समस्त व्यय अकादमी द्वारा वहन किया जायेगा। साहित्यकार अपना जीवन परिचय,रंगीन पासपोर्ट साइज के दो फोटो, प्रकाशित कृतियों की दो प्रतियाँ तथा स्मारिका में प्रकाशन हेतु सम्बंधी विधा की दो उत्कृष्ट रचनाओं सहित ३१ मई २०१३ तक भेजेंः

अध्यक्ष,
मध्यप्रदेश तुलसी साहित्य अकादमी,
सुन्दरम बंगला, ५०, महाबली नगर, कोलार रोड भोपाल, म.प्र.

साहित्य समाचार

गंगा एक्शन परिवार द्वारा कृष्ण कुमार यादव सम्मानित

महाकुंभ, प्रयाग-२०१३ के दौरान उत्कृष्ट विभागीय सेवाओं के साथ-साथ पर्यावरण एवं गंगा-सरंक्षण में समृद्ध योगदान हेतु गंगा एक्शन परिवार द्वारा इलाहाबाद परिक्षेत्र के निदेशक डाक सेवायें श्री कृष्ण कुमार यादव को सम्मानित किया गया।

यह सम्मान कुंभ क्षेत्र स्थित परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश के शिविर में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में फिल्म अभिनेता विवेक ओबॅराय, परमार्थ निकेतन के परमाध्यक्ष व गंगा एक्शन परिवार के मुखिया स्वामी चिदानंद सरस्वती 'मुनि जी' ने दिया। 'ग्रीन एंड क्लीन कुंभ' की थीम पर आयोजित इस कार्यक्रम में श्री यादव को सम्मान स्वरूप पौधे भेंट किए एवं आशा व्यक्त की कि पर्यावरण संरक्षण के प्रति उनका योगदान यूं ही समाज व राष्ट्र को प्राप्त होता रहेगा। स्वामी चिदानंद सरस्वती 'मुनि जी' ने कृष्ण कुमार को स्नेहाशीष देते हुए कहा कि देश को युवा पीढ़ी से काफी अपेक्षायें है और श्री यादव इस भाव-भूमि पर उत्कष्ट कार्य कर रहे हैं।

इस अवसर पर डाक विभाग द्वारा कुंभ की बेला में जारी विशेष आवरणों का सेट निदेशक डाक सेवाएँ, इलाहबाद परिक्षेत्र कृष्ण कुमार यादव ने फिल्म अभिनेता विवेक ओबेराय, परमार्थ निकेतन के स्वामी चिदानंद मुनि और अखिल भारतीय आतंकवाद विरोधी मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष मनिंदरजीत सिंह बिट्टा को भी भेंट किया। विवेक ओबेराय और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने डाक-विभाग की इस पहल को सराहा, जिसके माध्यम से देश-विदेश में भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार हो रहा है.

''गंगा माँ की पुकार'' का लोकार्पण

मुरादनगर, आयुध निर्माणी में सेवारत कवि इन्द्रप्रसाद 'अकेला' ने 'गंगा माँ की पुकार' काव्य कृति रचकर साहित्य जगत और समाज को बहुत बड़ी उपलब्धि सौंप दी. यह आशीर्वाद दिया परमार्थ निकेतन धाम ऋषिकेश के परमाध्यक्ष स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी महाराज ने। 'गंगा माँ की पुकार' काव्य कृति में कवि अकेला जी ने ७०० दोहों की रचना की है, जिसमें गंगा मैया का विस्तृत वर्णन किया गया है। परम पूज्य स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी महाराज (मुनि श्री) जी के साठवें जन्मोत्सव के शुभअवसर पर लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर कवि सम्मेलन

काव्यकृति (गंगा माँ की पुकार) का लोकार्पण करते हुए..स्वामी चिदानंद सरस्वती जी महाराज

का भी आयोजन किया गया, जिसमें डॉ० रमा सिंह, सत्यपाल सत्यम, मनोज कुमार मनोज, अनुभव 'अनुभवी' आदि ने भाग लिया. इस अवसर पर इन्द्रप्रसाद 'अकेला' एवं अन्य सभी कवियों का अभिनन्दन किया गया. जन्मोत्सव एवं लोकार्पण के इस पुनीत पावन पर्व पर सर्वश्री रमेश भाई ओझा, मोरारी बापू, जैन मुनि आचार्य लोकेश सुधाँशु जी महाराज, इमाम उमर अहमद इलियासी, स्टील किंग विनोद मित्तल, गोयनका, हिन्दुजा परिवार, फिक्की के चेयरमैन एवं डी०आर०डी०ओ० के चेयरमैन, यहूदी रबाई प्रमुख डेविड रोजेन उपस्थित थे. सभी अतिथियों को लोकार्पित काव्यकृति की प्रतियाँ भेंट की गई।

समाज सेवियों को पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति सम्मान

संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष स्व० पवहारी शरण द्विवेदी की स्मृति में इस वर्ष से समाज सेवा में उल्लेखनीय योगदान करने वाले समाज सेवियों को पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान प्रदान किया जाएगा. इस सम्मान में **पाँच हजार एक रुपये नगद**, स्मृति पत्र प्रदान किए जाएँगें. प्रतिभागियों को अपने समाज सेवा का प्रामाणिक विवरण कार्यालय के पते पर 30 सितम्बर 2013 तक.

एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद-211011, उ.प्र.

वंदे मातरम (लघु कथा संग्रह)   **जय श्रीराम** काव्य संग्रह

रचनाकारः आचार्य यदुमणि कुम्हार

प्रकाशकः

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,

इलाहाबाद, उ.प्र.-२११०११

फैल्ट एसोसिएशन द्वारा कर्मयोगी देवदत्त शर्मा 'दाधीच' का अभिनन्दन

जयपुर, राजस्थान. ऑल इण्डिया वूल एण्ड नमदा (फैल्ट) एसोसिएशन, जयपुर द्वारा २६ जनवरी २०१३ को वरिष्ठ लेखक एवं समाज सेवी का अभिनन्दन किया गया।

'सरल, सौम्य, मृदुभाषी, मिलनसार, दृढ़प्रतिज्ञ, वचनबद्ध, राष्ट्र एवं समाज सेवा में समर्पित सम्मान दृष्टि वाले सकरात्मक सोच, साहित्यकार श्री देवदत्त शर्मा 'दाधीच' छोटी खाटू वाले का नाम नमदा फैल्ट इण्डस्ट्रीज में दैदीप्यमान रहेगा. आप साहित्य प्रेमी है तथा अपनी रचनाओं में सामाजिक, समरसता, राष्ट्रीयता, लोक मंगलकारी, भारतीय सांस्कृतिक, परम्पराओं का उल्लेख किया है-विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में आपकी रचनाएं प्रकाशित हो रही है.

श्री शर्मा की जीवन यात्रा छोटी खाटू, नागौर ग्राम की शौर्य, शान्ति, भक्ति एवं प्रबुद्ध लोकचेतना, लोक संस्कृति व लोक ऊर्जा को लेकर विराट के शिखर पर पहुंचने के लिए गतिशील रही है. आपका जीवन काफी समय से देश, धर्म, समाज, परोपकार, भारतीय संस्कृति, साहित्य और एसोसिएशन की अराधना में बीता है.

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से प्राप्त देश भक्ति, समाज सेवा, साहित्य सेवा व सामाजिक दायित्व के संस्कार आपके जीवन में समाये हुए हैं. आप अनेक संस्थाओं, साहित्य क्षेत्र की पत्र-पत्रिकाओं से जुड़े हुए हे. आपकी जन्म स्थली छोटी खाटू व कर्म स्थली जयपुर के प्रति अगाध, निःस्वार्थ, समर्पित एवं गहरा प्रेम है. जब से एसोसिएशन की स्थापना हुई उसमें आपकी प्रमुख भूमिका रही है. वर्ष १९७७ से जनवरी २०१३ तक आप विभिन्न पदों पर रहते हुए वर्तमान में सभापति पद पर आसीन है.

श्री दाधीच का सम्मान, अभिनन्दन निःसन्देह एक कर्मयोगी, समाजसेवी, राष्ट्रप्रेमी का सम्मान है. इनकी सेवाएं हमेशा चिरस्मरणीय रहेगी. ऊन नमदा व फैल्ट इण्डस्ट्रीज में आपने नई जागृति पैदा की है. आपका जीवन सुख-दुख में हमेशा एक सा रहा है. ७० वर्ष बसन्त के आपने पार किये हैं, स्वास्थ्य ठीक नहीं रहते हुए भी सुबह से शाम तक सामाजिक कार्य में लगे हुए हैं.

सेवा का पथ अति अनन्त,
इसका कभी होता नहीं अन्त।
जो इस पथ पर चलता है,
सच्चे अर्थो में वहीं है सन्त।

वह अपने लिये नहीं,
लोक मंगल के लिए जिता है।
वह सुधा बांटता है जग को,
पर स्वयं हलाहल पीता है।

चौथमल भगेरिया — अध्यक्ष
श्री किशन अजमेरा — मंत्री

सूर्य नारायण 'शूर' को मां सरस्वती रत्न सम्मान

नई दिल्ली. गगन स्वर बुक्स, पब्लिकेशन के तत्वावधान में पिछले दिनों दिल्ली के हिन्दी भवन सभागार में एक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया जिसमें इलाहाबाद के सूर्य नारायण 'शूर' को 'मां सरस्वती रत्न सम्मान-२०१३' से विभूषित किया गया. साथ ही उनके ग़ज़ल संग्रह 'मैं ग़ज़ल हूं' का विमोचन भी किया गया. श्री शूर को विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मानों एवं उपाधियों से विभूषित किया जा चुका है. पत्रिका परिवार की तरफ से उन्हें हार्दिक बधाई

शबनम शर्मा की लघु कथाएं

फैसला

मीनू को इस घर में आए करीब २० बरस हो चुके थे, वह घर की बड़ी बहू है। माँ-बाप की सेवा करना वह अपना परम धर्म समझती है। मायके से संस्कार ही ऐसे मिले हैं। १० साल पहले सास की कैंसर से मष्त्यु हो गई। मीनू ने अपनी तरफ से कोई कसर न छोड़ी। किसमत ने साथ न दिया तो बस यह कि उसके घर में औलाद न हुई। उसके देवर ननद की षादी हो गई। सब अपने परिवारों के साथ अलग हो गये परन्तु वो अपने पुष्तैनी घर में रही। वह व्यवसाय से डाक्टर है, पर उसे मान मर्यादा का बहुत ख्याल है। वह पिछले बीस बरसों से अपने सास-ससुर को समर्पित है। पिछले दिनों उसके ससुर अपने छोटे बेटे के पास गये। वो लोग अमेरिका में बसे हुए हैं। वहाँ वह छः महीने रहे। बच्चों ने अपने पिता को जी भर कर आराम दिया। जगह-जगह घूमाने भी ले गये। अच्छी-अच्छी कीमती चीज़ें भी दिलाई। उनके पास ३ वर्शीय छोटा बच्चा था। उनका समय उस बच्चे के साथ कट जाता था। उसकी तोतली बातें उन्हें मोह लेती थी। पिछले महीने वो वापस आए। वहाँ की यात्रा का, बीते दिनों का बखान करते न थकते थे। इतवार का दिन था। मीनू चाय लेकर नीचे आई। सब लोग बैठक में ही बैठे थे। ससुर ने फिर से अमेरिका की बात छेड़ दी। बातों-बातों में उन्होंने कहा, ''मैं सोचता हूँ कि मैं अपनी सारी संपत्ति, पैसा, सोना अब घर के नए वारिस के नाम कर दूँ।'' मीनू के हाथो से फाखते उड़ गये। धीरे से बोली, ''पापा हमारा सब कुछ भी उध र ही जाना था, हमारे जिंदाजी हमें आप अनाथ करने की सोच बैठे।'' वह रोती-रोती अपने कमरे में आ गई। औलाद न होने पर ससुराल वालों के इस क्रूर फैसले को सोचते उसे कब नींद आ गई, पता ही नहीं चला.

एडजस्टमैंट

विमा बहुत बड़े परिवार में ब्याह कर आई थी। बड़ी बहू थी उसे घर में सबको देखना पड़ता था। चाचा ससुर, चाची सास, अपने सास-ससुर, देवर-ननदें मिलाकर करीब २५-२६ का परिवार था। रिवाज़ नहीं था कि घूंघट से निकलकर बात की जाए। सुबह ३ बजे से रात ११ बज जाते, वह सबको खुष करने में लगी रहती। धीरे-धीरे परिवार विघटित होता गया। जैसे-जैसे षादियाँ हुई। ननदें अपने घर चली गई, देवरानियों ने बड़े कुटुम्ब में रहने से इन्कार कर दिया। फिर भी विमा अपने उसी परिवार के साथ रही। सास-ससुर उसे बहुत प्यार करते थे। वह उनके साथ ही रही। उसके भी अपने दो बच्चे हुए जोकि दादा-दादी के संरक्षण में अच्छे संस्कार पाकर बड़े हुए। विमा को अपने बच्चों पर नाज़ था। आज वो बूढ़ी हो चुकी थी। उसे कई समस्याएँ हो गई थी। एक दिन अचानक उसके पेट में जोर का दर्द उठा। अलसर फट गया था, हालत नाज़ुक थी। अस्पताल ले जाया गया। वहाँ उसका तत्काल ही आप्रेषन करना पड़ा। बेटा दूर था, आया माँ से कहने लगा, ''माँ! मेरे साथ चलो, कुछ दिन सेवा-पानी हो जाएगी, आप हमारे साथ भी रह लेंगी और ठीक भी हो जाएँगी।'' माँ ने कहा, ''बेटा तुझे अच्छे से पता है, तेरी बहू को काम करने की आदत नहीं है। इस वक्त मुझे एक इन्सान की सख्त जरूरत है।'' उसने तपाक से जवाब दिया, ''माँ! अब इस हालात में आपको ही उससे एडजस्टमैंट करनी पड़ेगी। उसे तो मैं कुछ कह नहीं सकता, उसे आराम की आदत है।'' दरवाज़े पर खड़े बाबूजी तौलिये से मुँह पोंछते बोले, ''नहीं लाजो, मैं ज़िन्दा हूँ, तुझे एडजस्टमैंट की ज़रूरत नहीं। मैं हूँ तेरे साथ।''

बड़ी माँ

दत्त की षादी को १२ बरस बीत गये थे। एक बेटी हुई और चल बसी। उसके बाद घर में कोई भी किलकारी नहीं गूँजी। घर में सब फूली को पूछते, उसे यह प्रष्न नागवार सा लगता। उसकी सास हमेषा अपने बेटे को दूसरी षादी के लिए उकसाती। आखिर १५ साल बीत गये। माँ ने बेटे की दूसरी षादी कर दी। घर में दूसरी औरत का आना किसको अच्छा लगता है। दूसरी औरत से दत्त को ३ लड़के एक लड़की हुई। फूली ने समझदारी से काम लिया। उन्होंने बच्चों को बड़ी निषपक्ष भावना से पाला। बच्चे उन्हें बड़ी माँ कहते थे और उनसे बहुत प्यार करते थे। परन्तु कहीं न कहीं उनके मन में भी यह भावना थी कि उनका अपना कोई बच्चा नहीं है। बच्चे बचपन में उन्हें बहुत तंग करते थे। समय बीतता चला गया। बच्चे उन्हें बड़ी माँ के नाम से पुकारते थे। बड़े होकर उन्हें परिवार वालों ने बता ही दिया कि वो उनकी माँ नहीं है। इससे बड़ी माँ के हृदय को बड़ी चोट लगी। बड़ी माँ अब बूढ़ी हो चुकी थी। उसका सब सम्मान करते थे। एक दिन उनकी तबीयत बहुत खराब हो गई, उन्हें लगा उनका

-नवाब गली, नाहन, जिला सिरमौर, हि.प्र.-१७३००१

जंगलराज की ओर बढ़ते समाज का इलाज

पिछले दिनों दिल्ली में हुए सामूहिक बलात्कार के कारण जनाक्रोश उबल पड़ा था. नारी-जाति के 'त्राहिमाम, त्राहिमाम' से पूरा देश आहत हो उठा था. आक्रोशित आमजन ने धरना, प्रदर्शन आदि के द्वारा अपनी भावनाओं का इज़हार किया था और दरिन्दे बलात्कारियों को सरेआम फ़ांसी पर लटकाने की मांग की थी. अनेक लोगों और संगठनों ने इस्लामी क़ानून के मुताबिक़ बलात्कारियों को सज़ा देने की भी मांग की थी.

उपर्युक्त सन्दर्भ में मौलाना मुहम्मद जिरजीस करीमी की किताब 'बढ़ता अपराध-समस्या और निदान' की प्रासंगिकता, महत्ता और सार्थकता बढ़ गई है. इस किताब में लेखक ने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में दिन-प्रतिदिन बढ़ते अपराध के विविध रूपों, उनके कारणों और निवारण के उपायों पर विस्तार से रोशनी डाली है. अपराध कर्म क्यों किए जाते हैं? 'मर्ज़ बढ़ता गया, ज्यों-ज्यों दवा की' वाली स्थिति क्यों उत्पन्न हो गई है? इसकी रोकथाम और इसके समूल विनाश के क्या उपाय है? इस संदर्भ में इस्लामी दण्ड-विधान कैसी और कितनी भूमिका निभा सकता है? इत्यादि. लेखक ने ऐसे अनेक अनेक प्रश्नों पर गहन चिन्तन-मनन करके अपराध-ग्रस्त समाज के समक्ष प्रस्तुत पुस्तक के रूप में मानो एक अत्यन्त उपयोगी और सार्थक गाइड बुक का अनमोल उपहार प्रस्तुत किया है.

यह पुस्तक छः अध्यायों में विभक्त है. पहले अध्याय में अपराध की चर्चा की गई है. दूसरे अध्याय में 'अपराध के कारण' और तीसरे अध्याय में 'अपराध के परिणाम' पर प्रकाश डाला गया है. चौथे अध्याय में 'अपराध की रोकथाम में वर्तमान क़ानून की असफलता के कारण' गिनाए गए हैं, जबकि पांचवे अध्याय में 'अपराध और दण्ड के बारे में इस्लामी दृष्टिकोण' प्रस्तुत किए गए है और छठे अध्याय में 'इस्लाम में अपराध की रोकथाम के उपाय' बताए गए हैं.

कुल मिलाकर यह पुस्तक पठनीय है. स्वस्थ, शान्तिपूर्ण और अपराध-रहित समाज के निर्माण में यह एक गाइड बुक की भूमिका निभा सकती है.

आख़िरी बात यह युद्ध-अपराध को चित्रित करने वाला आवरण-पृष्ठ बहुत आकर्षक है. परन्तु इस पर प्रदर्शित निष्क्रिय टैंक का निशाना कहीं और है, आग कहीं और लगी है. छपाई अच्छी है.

पुस्तकः बढ़ता अपराध-समस्या और निदान **पृष्ठ** : १६२ **मूल्यः** रु० ७०/
लेखकः मौलाना मुहम्मद जिरजीस करीमी
प्रकाशकः मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स, नई दिल्ली
समीक्षकः मुहम्मद इलियास हुसैन

बढ़ती हिन्दी

प्रस्तुत संग्रह संतो व सेनानियों के संघर्ष की भाषा बढ़ती हिन्दी नामक पुस्तक अपने आप में लेखक डॉ. ब्रदी नारायण तिवारी जी जुड़ते ही अपनी गुणवत्ता व विश्वसनीयता की पहचान बन जाती है. आवरण पृष्ठ के पीछे राष्ट्रभाषा हिन्दी के बारे में कुछ विद्वजनों के विचार से शुरु हुआ इस पुस्तक का क्रम हिन्दी विकास यात्रा पर जाकर समाप्त होता है. प्रथम आलेख 'स्व स्फूर्ति विकास की झलक' में हिन्दी के बारे में लिखा है-

भारत के अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में हिन्दी बोलने पर बच्चों को दण्डित किया जाता है. डॉ० अम्बेडकर ने भारत के विकास तथा राष्ट्रीय एकता की कड़ी मानते हुए भारतीय संविधान में हिन्दी को ही राजभाषा का दर्जा प्रदान किया. जबकि उ.प्र. के कुछ दलित नेता हिन्दी को नहीं अंग्रेजी को दलित मुक्ति का माध्यम मानते हैं. भारत में कई विश्वविद्यालयों की वेबसाइटें हिन्दी में नही है जबकि विश्व में हीरा खदानों में छठवां स्थान रखने वाला पश्चिमी अफ्रीका के छोटे से देश 'सियेरा लियोन' के न्जाला विश्वविद्यालय की पूरी जानकारी अंग्रेजी के साथ हिन्दी में भी उपलब्ध है.

इस पुस्तक के दूसरे लेख 'तुलसी निष्ठ विदेशी मनीषी' जो हिन्दी योद्धा फादर डॉ० कामिल बुल्के को समर्पित है. लेखक ने लिखा है-'तुलसी के कालजयी ग्रंथ 'रामचरित मानस' के प्रभाव से रूस में रामकथा के मंचन मास्को के थियेटर में होने लगे. देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरु तथा श्रीमती इंदिरा गांधी ने सोवियत कलाकारों के रामकथा मंचन क अति प्रशंसा की थी. वारान्निकोव ने तुलसी को आन्तरिक रूप से समझा. उपरोक्त लेख तथा 'हिन्दी का विश्वव्यापी स्वरूप' नामक में लेख में लेखक ने विदेशियों द्वारा हिन्दी भाषा में किये गए कार्य तथा हिन्दी भाषा के विश्वव्यापी स्वरुप को दर्शाने का पूरा प्रयास किया है.

कुल १५ आलेखों के संग्रह से सुसज्जित इस पुस्तक में लेखक ने अपनी गरिमा, कार्य को भली भांति परिभाषित किया है.

पुस्तकः बढती हिन्दी **पृष्ठः** ६१
मूल्यः रु० २१/
लेखकः डॉ० बद्री नारायण तिवारी
प्रकाशकः मानस संगम, कानपुर